सम्पादक
डॉ. हारून रशीद सिद्दीक़ी
सहायक
मु. गुफ़रान नदवी
मु. हसन अन्सारी
हबीबुल्लाह आज़मी

कार्यालय
मासिक सच्चा राही
मजलिसे सहाफ़त व नशरियात
पो0 बॉ0 नं0 93
टैगोर मार्ग, नदवतुल उलमा, लखनऊ
फोन : 0522–2740406
: 0522–2741231
E-mail :
nadwa@sancharnet.in

सहयोग राशि

एक प्रति	रु0 9/-
वार्षिक	रु0 100/-
विशेष वार्षिक	रु0 500/-
विदेश में (वार्षिक)	रु0 25 यूएस डालर

चेक/ड्राफ्ट पर यह लिखें
"सच्चा राही"
पता
सेक्रेटरी, मजलिसे सहाफ़त व नशरियात
नदवतुल उलमा, लखनऊ, 226007

मुद्रक एवं प्रकाशक अतहर हुसैन द्वारा काकोरी आफसेट प्रेस से मुद्रित एवं दफ्तर मजलिसे सहाफ़त व नशरियात नदवतुल उलमा, लखनऊ से प्रकाशित।

Visoin Computers- 9838644687

हिन्दी मासिक
सच्चा राही
सामाजिक एवं साहित्यिक
लखनऊ

जनवरी, 2009 वर्ष 7 अंक 11

अक़ीद–ए–ख़त्मे नुबुव्वत

जिस शख़्स का यह मज़हब हो कि नुबुव्वत का दरवाज़ा बन्द नहीं, बल्कि नुबुव्वत हासिल हो सकती है, या यह कि कोई वली नबी से अफ़ज़ल हो सकता है, ऐसा शख़्स ज़िन्दीक़ और वाजिबुल्-क़त्ल है, क्योंकि वह क़ुर्आन की आयत "ख़ातमन्नबिय्यीन" की तकज़ीब करता है।

(अल्लामा ज़रक़ानी)
(अलमवाहिब ६:१८८)

आपके पते के साथ जो खरीदारी नम्बर है अगर उसके नीचे लाल या काली लाइन है तो समझें कि आपका सालाना चन्दा खत्म हो चुका है। अतः आप जल्द ही अपना चन्दा भेजने का कष्ट करें। और मनीआर्डर कूपन पर अपना खरीदारी नम्बर अवश्य लिखें। अगर आपका फोन या मोबाइल हो तो उसका नम्बर भी लिखें।

विषय एक दृष्टि में

शहादत है मतलूबो मक़्सूदे मोमिन	सम्पादकीय	3
क़ुर्आन की शिक्षा	मौ0 मु0 मंज़ूर नोमानी	6
प्यारे नबी की प्यारी बातें	अमतुल्लाह तस्नीम	7
इस्लामी अक़ाइद	मौ0 मुजीबुल्लाह नदवी	9
भारत का संक्षिप्त इतिहास	सैयद अबू ज़फर नदवी	12
एक तक़रीर की तल्ख़ीस	उ़ज़मा भोपाली	15
रौज़–ए–अनवर पर	आ़सी लखनवी	17
समाज सुधार	एम ह़सन अन्सरी	18
.क़ुर्आन की पारिभाषिक शब्दावली	डा0 मु0 अह़मद	19
हमें कहना है कुछ अपनी ज़बां से	अ़ज़ीज़ुल ह़सन सिद्दीक़ी	23
आप के प्रश्नों के उतर	इदारा	28
हम औऱ हमारा शरीर	डा0 मुज़फ़्फ़र अ़ली	30
अतंर्राष्ट्रीय समाचार	डा0 मुईद अशरफ़	31

शहादत है मतलबो मक़सूदे मोमिन
न माले ग़नीमत ने किश्वर कुशाई

-डा. हारून रशीद सिद्दीक़ी

दीनी हैसीयत से हम और सारे ईमान वाले जो कुछ जानते हैं और जो भी दीनी कांम करते हैं उस की बुन्याद अल्लाह के आख़िरी नबी ह़ज़रत मुह़म्मद सल्लल्लाहु अ़लौहि व सल्लम की तअ़लीमात है। जिन दीनी मअ़लूमात को और जिन दीनी कामों को ह़ज़रत मुह़म्मद सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की तअ़लीमात में न पाया जा सके उन को दीनी कहना और समझना बहुत बड़ी भुल है और उन मअ़लूमात पर यक़ीन रखना, नीज़ ऐसे अअ़माल को अपनाना नेकी बरबाद गुमाह लाज़िम के मिस्दाक़ होना है और हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लौहि व सल्लम की तअ़लीमात किताब व सुन्त (कुर्आन व ह़दीस) की शक्ल में मह़फ़ूज़ हैं। य़ह सह़ीह़ है कि किताब व सुन्नत के मक़्सद व मतलब समझने में चोटी के मुख़लिस उ़लमा में भी इख़्तिलाफ़ रहा है जिस के सबब ह़नफ़ी मालिकी, शाफई, ह़ंबली और अहले ह़दीस नाम के मस्लक वजूद में आ गये, लिहाज़ा इन पांचों मसलकों की दीनी मअ़लूमात और उन के दीनी अअ़माल को किताब व सुन्नत में गुंजाइश के सबब अल्लाह के आख़िरी रसूल ह़ज़रत मुह़म्मद सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की तअ़लीमात के तह़त दीनी ही समझा जाएगा।

इस मअ़मूली तमहीद के बअ़द शहीद व शहादत की अहम्मीयत और अ़ज़मत पर ध्यान दें। शहादत की अ़ज़मत का अन्दाज़ा अल्लाह के ह़बीब सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की उस ह़दीस से लगाया जा सकता है जिसे बुख़ारी व मुस्लिम दोनों ने ह़ज़रत अबू हुरैरा (रजि.) से नक़्ल किया है कि ह़ुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फरमाया "क़सम है उस ज़ात की जिस के क़बज़े में मेरी जान है मै पसन्द करता हूँ कि मैं अल्लाह की राह में मारा जाऊँ फिर ज़िन्दा किया जाऊं फिर अल्लाह की राह में मारा जाऊं।

ह़दीस में चार बार मारे जाने की तमन्ना का ज़िक्र है। उ़लमा ने इस चार को चार की गिन्ती पर मुन्ह़ासिर नहीं समझा है बल्कि इस से बार बार का मफ़्हूम समझा है। अल्लाहु अक्बर वह ज़ात जो सारी मख़लूक़ में अफ़्ज़ल व बरतर का दर्जा रखती है जिस का मर्तबा ख़ालिक के बअ़द सब से ऊंचा है वह बार बार शहीद होने की तमन्ना करे इस राज़ को अल्लाह ही जानता है, शहीद को जो मारतबा मिलेगा किताब व सुन्नत से ज़ाहिर है लेकिन ऐसा लगता है कि शहिद को शहादत के वक़्त किसी ख़ास लज़्ज़त से भी नवाज़ा जाता है जिसे शहीद ही जान पाता है और वही उस से लुत्फ़ अन्दोज़ होता है, कुछ भी हो अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने बार बार ज़िन्दा किये जाने और शहादत ह़ासिल करने की तमन्ना की।

शहीद वह है जो अल्लाह की राह में मारा जाए क़त्ल किया जाए। अल्लाह की राह से मुराद जिहादफ़ी सबीलिल्लाह है। यहां धोखा न होना चाहिये, जिहाद मुसलमानों के अमीर की क़ियादत में होता है जिस की बहुत सी शर्तें है। उन में से यह कि कोई मुल्क इस्लामी मम्लिकत पर ह़म्ला आवर हो। या कोई मुल्क अपने मुल्क में मुसलमानों को दीने इस्लाम पर चलने न देता हो। इसी तरह के और भी अस्बाब हैं जिन पर मुसलमानों का काजी जिहाद का फत्वा देता है इस फत्वे में भी क़ाज़ी व अमीर को यह देखना होता है कि लड़ाई के लिये मुक़ाबिल के लड़ने वालों की तअ़दाद के मुक़ाबले में अपने लड़ने बालों की तअ़दाद कितनी है इसी तरह लड़ने का सामान कितना है?

कम से कम आधा तो हो वरना जिहाद का फ़त्वा न दिया जाएगा अल्बत्ता अगर कोई ज़ालिम हुकूमत कम तअ़दाद मुसलमानों पर ह़मला कर दे तो दिफ़ाअ़ में लड़ने की इजाज़त होगी। इन लडाइयों में जो

शख़्स मारा जाएगा वह शहीद होगा, ऐसे ही शहीदों के लिये क़ुर्आन का हुक्म है कि "जो अल्लाह की राह में मारे जाएं उनको मुर्दा मत कहो, वह (आलमे बरज़ख़ में एक ख़ास ज़िन्दगी के साथ) ज़िन्दा हैं लेकिन तुम उन की ज़िन्दगी को समझ नहीं सकते (2:154) नीज़ क़ुर्आन ने कहा "जो लोग अल्लाह की राह में क़त्ल किये गये हैं उनके बारे में ऐसा न समझो कि वह मुर्दा हैं बल्कि वह तो ज़िन्दा हैं, वह अल्लाह के मुक़र्रब है, उन को रोज़ी दी जाती है (3:169) इस लिहाज़ से वह तमाम हज़रात शहीद हैं जो सरियात या ग़ज़वात जैसे बद्र उहुद, हुनैन बग़ैरह में मारे गये। वह हज़रात भी अअ़ला दर्जे के शहिद हैं जिन पर इस्लाम दुशमनों ने हमला कर के उनकी जान ले ली और उन को दिफ़ाअ़ का मौक़अ़ न मिला या मिला मगर उन्होनें अपने इज्तिहाद से दिफ़ाअ़ की लड़ाई न लड़ी या लड़ने का मौक़अ़ न मिला जैसे हज़रत उमर, हज़रत उसमान हज़रत अली रज़ियल्लाहु अ़न्हुम और उन जैसे, वह भी अअ़ला दर्जे के शहिद हैं, जिन्हों ने अपनी कमज़ोरी के वावजुद दुशमन का मुक़ाबला किया मगर मारे गये जैसे शुहदा–ए–बिउरे मऊना, हज़रत हुसैन और उन के रुफ़क़ा, हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर और उन के रुफ़क़ा, हज़रत ज़ैद बिन अ़ली बिन हुसैन और उन जैसे दूसरे हज़रात, अल्लाह उन सब से राजी हो और इन पर अपनी रहमतों की बारिश करे। आमीन।

लेकिन बड़े रंज व अफ़्सोस की बात उन तन्ज़ीमों के लिये है जो उपने को अच्छे अच्छे इस्लामी नामों से मौसूम करते हैं और जगह जगह बम दाग़ कर बे गुनाहों की जान लेते हैं। ख़ुदा करे इन तन्ज़ीमों के फ़र्ज़ी नाम हों जिन्हें मुस्लिम दुशमनों ने गढ़ लिये हों लेकिन अगर वाक़िअ़तन तंज़ीमैं हैं और आम जगहों पर बम दाग़ कर बे गुनाहों की जान लेते हैं तो वह क़ुर्आन मजीद की इस वअ़ीद पर ध्यान दें "और जो किसी ईमान वाले को जान बूझ कर क़त्ल करे उस की सज़ा जहन्नम है जिस में वह पड़ा रहेगा और उस पर अल्लाह तआ़ला का ग़ज़ब हुआ और उस की लअ़नत और अल्लाह ने उस के लियें बहुत बड़ा अ़ज़ाब तैयार कर रखा है। (4:93) और यह हुक्म भी पढ़ लें। : और ऐसे शख़्स को क़त्ल न करो जिस के क़त्ल को अल्लाह ने हराम किया हो मगर हाँ किसी शरअ़ी हक़ की बिना पर। (6:152) ग़ौर करें क्या किसी गैर मुस्लिम को बे सबब क़त्ल करने का जवाज़ शरीअ़ते मुहम्मदीया (अ़ला साहिबिहस्सलातु वस्सलाम) की तअ़लीम में है ?

हनफी, मालिकी, शाफअी, हंबली अहले हदीस या शीआ़ हज़रात के यहाँ है ? हरगिज़ नहीं। सिवा इस के वह तुम से लड़े बस शरअ़ी इजाज़त के बिगैर ग़ैर मुस्लिमों की भी जान लेना अल्लाह के हुक्म की ख़िलाफ़ वरज़ी है जिस की सज़ा जहन्नम है, और जो मुसलमान ख़ुद-कुश बम बान्ध कर किसी मजमेअ़ में बम दग़ा कर अपने को क़ुर्बान करता है वह दुहरा गुनाह करता है एक तो बे गुनाहों के मारने का दुसरे ख़ुद को मारने का, ख़ुद कुशी के बारे में भी क़ुर्आन के हुक्म पर ग़ौर कर लें "और तुम अपने आप को क़त्ल न करो" (4:29) अगली आयत में है कि "जो ऐसा करेगा हम उस को जहन्नम में डाल देगे"

क्या इन खुले अह्काम की मौजूदगी में कोई मुसलमान बम धमाका करके बे गुनाहों की जान ले सकता है? हरागिज़ नहीं। ख़ुदा करे यह जुर्म जिन मुस्लिम तन्ज़ीमों से मंसूब किया जा रहा है बिल्कुल झुठ हो और मुझे तो गुमाने ग़ालिब है कि यह सब गढ़ी कहानियां हैं लेकिन ख़ुदा न ख़्वास्ता यह सही हो कि बअ़ज़ नाम निहाद इस्लामी तंज़ीमें ऐसा कर रही हैं तो वह इस्लामी शरीअ़त में अपना चेहरा पहचान लें। बमों के दाग़ने और बे गुनाहों के मारे जाने और जख़्मी होने का यह सिल्सिला किसी तरह ख़त्म नहीं हो रहा है। चाहे इसे मुस्लिम तंजीमैं अंजाम दे रही हों या ग़ैर मुस्लिम तंज़ीमों या अफ़्राद का काम हो तो वह अपना अंजाम समझ लें। हम ने अब तक जो कुछ कहा वह इस्लामी शरीअ़त के तहत बात की तो हो सकता है ग़ैर मुस्लिम दहशत गर्द यह समझें कि हम तो इस्लाम के बयान किये हुए जहन्नम को मानते ही नही हम को क्या डर तो उन को मअ़लूम होना चाहिये इस्लाम जो

कुछ बताता है वह फर्जी नहीं होता उस की हक़ीक़त होती है और किसी के न मानने से हक़ीक़त बदला नहीं करती न मानो आख़िर एक दिन आंख बन्द होनी ही है फिर जहां क़ब्र के अ़ज़ाब की हक़ीक़त, फिर जहन्नम की हक़ीकत सामने आएगी तो क्या करोगे? ज़ालिम फ़िरऔनियों के लिये क़ुर्आन ख़बर देता है कि क़ब्र में "यह सुबह व शाम आग के सामने लाये जाते हैं और जिस दिन क़ियामत क़ाइम होगी अल्लाह का हुक्म होगा कि इन को जहन्नम के सख़्त अ़जाब में दाख़िल करो (40:46) यही ह़श्र तमाम ज़ालिम ग़ैर मुस्लिमों का होगा। इस दुन्या में फित्ना व फ़साद फैलाने वाले लिख लें क़ुर्आन का वाक़ई फ़ैसला "उन के लिये दुन्या में भी सख़्त रुस्वाई है और आख़िरत में बहुत बड़ा अ़ज़ाब है।"(5:33) अमरीका का ज़ालिम सरबराह हो या इस्राईल का, गुजरात के मोदी हों या उन जैसे कोई और क्या उन को इस दुन्या में इ़ज़्ज़त ह़ासिल है ? क्या उन को इस दुन्या में सुकून ह़ासिल है? हरगिज़ नहीं एक पल के लिये भी नहीं, वह बताएं या छुपाएं उन की नीन्द ह़राम है। उन को सुकून नसीब नहीं और मरने के बअ़द जो कुछ भुगतें गे वह तो बहुत ही सख़्त हो गा।

रहीं मुसलमानों की तकालीफ़ तो उन को तो हर हर तक्लीफ़ पर जो इनआ़म मिलने वाला है उस का तसव्वुर में भी लाना मुशकिल है ।रहे वह लोग जिन की जानें गईं उन के दरजात का तो पूछना ही क्या। रहे उन की आल औलाद के मसाइब इनशा अल्लाह वह भी उन के लिये ख़ैर का सबब होगा। यह बातें तो ईमान वालों के सुकून व इतमीनान के लिये बयान की गई, इस का यह मतलब हर गिज़ नहीं कि मुसलमान सवाब लेने के लिये ज़ुल्म सहते रहें और ज़ालिमों का शुकिया अदा करते रहें नहीं हरगिज़ नहीं वह उलमा से मशवरे के साथ शरअ़ी ह़ुदूद में जो कुछ कर सकते हों उस में कोताही करेंगे तो गुनहगार होंगे। वह ज़ुल्म न करें लेकिन अगर पकड़ सकें तो ज़ालिम का हाथ ज़रूर पकड़ें और अपने अल्लाह पर भरोसा रखते हुए कानूनी चारा जुई भी करें। बात हमारी शहादत से शुरू हुई थी इस लिये फिर हम उसी जानिब लौटते हैं। शहादत ऐसी निअमत है और शहादत ऐसा मरतबा है कि मख़्लूक़ में सब से बड़े मरतबे वाले ने इस की तमन्ना की तो फिर मह़रूम है वह मुसलिम जिस के दिल में शहादत की तमन्ना न हो और अगर तमन्ना हो तो वह शहादत के किसी न किसी दर्जे को पा के रहेगा इस लिये कि अह़ादीसे शरीफ़ा में शहीद की बहुत सी क़िस्में बयान हुई हैं। शहादत का सब से अ़ला दर्जा तो जिहाद में मारे जाने वालों का है लेकिन ताऊन के मरज़ में मरने वाला या ताऊन के ज़माने में मरने वाला, पेट की बीमारी,दस्त दर्द, इस्तिस्क़ा वग़ैरह से मरने वाला, सांप काटे से मरने वाला, अपनी औलाद या माल की ह़िफ़ाज़त में मारा जाने वाला, बेगुनाह जेल में मरने वाला, औरत निफ़ास में मरे, या कोई मुसलमान डूब कर मरे, आग में जल कर मरे, गिर कर मरे, बुख़ार में मरे सफ़र में मरे, तालिब इ़ल्मी में मरे जो शख़्स रोज़ाना सौ बार दुरूद पढ़ता हो या शहादत की तमन्ना रखता हो इन सब को शहादत का कोई न कोई दर्जा ज़रूर मिलेगा यह लेखक भी शहादत की तमन्ना रखता है और अल्लाह तआ़ला से शहादत पाने की दुआ़ करता है। मगर बड़े अफ़सोस की बात है कि बर्रे सग़ीर हिन्द, पाक, बर्मा में शुहदाए करबला की याद में जो कुछ अ़लम तअ़ज़िया और मातम की शक्ल में किया जाता है यह सब इस्लाम की शरीअ़त के ख़िलाफ़ है और शहादत की ना क़दरी है। शहादत की हक़ीक़त समझने वाले के नज़दीक दुन्या की सारी दौलत शहादत की दौलत के मुकाबले में हेच है, सच ही कहा है अल्लामा इक़बाल ने शहादत है मतलूबो मक़्सूदे मोमिन। न माले ग़नीमत न किश्वर कुशाई"

❑❑

मअ़ज़िरत

ह़ज्ज की मशगूलीयत के सबब जनवरी का परचा लेट भी हुआ और सफ़ह़ात भी कम करने पड़े, इन्शाअल्ला आयन्दा इस कमी को पूरा किया जाएगा।

क़ुरआन की शिक्षा

– मौलाना मु. मन्ज़ूर नोमानी

इसी तरह सूरए–मुअ्मिनून के शुरू में जहाँ फ़लाह पाने वाले अहले–ईमान के औसाफ़ व अख़्लाक़ बयान किये गये हैं वहाँ एक ख़ास सिफ़त उन की यह भी बयान की गयी है:–

तर्जमाः– और वे जो अपनी अमानतों और अपने अ़ह्द का पास–लिहाज़ (ख़याल) रखते हैं।

और सूरए–मआरिज में जहाँ जन्नती मुसलमानों के औसाफ़ का किसी क़द्र विस्तार के साथ ज़िक्र किया गया है, वहाँ भी उन की इस सिफ़त को बिल्कुल इन्हीं शब्दों में ज़िक्र किया गया है।

कुर्आने–मजीद ने वफ़ाए–अ़ह्द की अ़ज़मत को एक दूसरे ढंग से इस तरह भी ज़ाहिर किया है कि इस को हक़ तआ़ला की सिफ़त बताया है। इर्शाद है:–

तर्जमाः– और अल्लाह से ज़ियादा कौन अपने अ़ह्द का पूरा करने वाला है।

और दूसरी जगह मनफ़ी अन्दाज़ (नकारात्मक ढंग) में फ़र्मायाः–

तर्जमाः– अल्लाह का वादा हक़ है। अल्लाह वादे के ख़िलाफ़ नहीं करता।

और एक दूसरी जगह बहुत ताकीद के साथ फ़र्माया गया है:–

तर्जमाः– और अल्लाह हरगिज़ वादा ख़िलाफ़ी नहीं करेगा।

और एक जगह फ़र्माया गया है:–

तर्जमाः– यक़ीन करो कि अल्लाह जआ़ला अपने वादे के ख़िलाफ़ नहीं करेगा। जो उस का वादा है जरूर पूरा होगा।

इन आयतों का मतलब यही है कि वफ़ाए–अ़ह्द अल्लाह तआ़ला की सिफ़त है। वे अपने हर अ़ह्द और हर वादे का पूरा करने वाला है। ज़ाहिर है कि इस में बन्दों के लिये इस की किस क़द्र असर वाली और दिलकश तरग़ीब है कि वे भी अ़ह्द को पूरा किया करें और अ़ह्द–शिकनी (वादा तोड़ने) से बचें।

अमानत (न्यास)

अमानत भी अस्ल में सच्चाई और रास्त बाज़ी ही की एक खास शक्ल है उर्दू मुहावारे में तो इस का मतलब सिर्फ़ इतना ही समझा जाता है कि किसी ने जो चीज किसी के पास रख दी हो उस में कोई ख़ियानत (न्यास भंग) और कोई बद दियानती (बेईमानी व विश्वास घात) न की जाये और उस शख़्स के मुतालबे पर या यूँ ही वह जैसी की वैसी वापस कर दी जाये। यह बात भी निःसंदेह एक अख़लाक़ी नेकी है लेकिन अरबी ज़बान और विशेष कर कुर्आनी मुहावरे में अमानत का मतलब इस से बहुत ज़ियादा वसीअ़ (विस्तृत) है। और तमाम हुकूक़ व फ़राइज़ का लिहाज (ख़याल) रखना भी इस में शामिल है। अमानत के मतलब के इस फैलाव को ध्यान में रखकर इस के मुतअ़ल्लिक़ कुर्आने–मजीद की आयतें पढ़िये। सूरए–निसॉअ में इर्शाद है:–

तर्जमाः– बेशक अल्लाह तआ़ला तुम को हुक्म देता है कि (तुम्हारे पास और तुम्हारे ज़िम्मे) जिन की अमानतें हैं उन को वे अमानतें अदा करो।

पस इस आयत के मुताबिक़ हर मुसलमान का फ़र्ज़ (कर्तव्य) है कि अगर उस के पास किसी शख़्स की कोई भी अमानत हो, या किसी का माली (धन संबधित) या ग़ैर माली कोई हक़ हो तो उस को पूरी दियानतदारी के साथ अदा करे, और उस के अदा करने में कोई कोताही और ख़ियानत न करे। यहाँ तक कि अगर कोई किसी मुआ़मले में इस से मशवुरा (विचार विमर्श) ले तो पूरी ख़ैर ख़ाही के साथ मशवरा दे। इसी तरह अगर किसी का कोई राज़ (भेद) मालूम हो जाये तो उस को भी अमानत ही समझे.....

शेष पृष्ठ 14 पर

प्यारे नबी की प्यारी बातें

—अमतुल्लाह तसनीम

एक दावत में रसूलुल्लाह (स0) के एजाज़ से खाने में बर्कत

हज़रत जाबिर (रज़ि0) से रिवायत है कि हम ख़न्दक़ खोद रहे थे। एक सख़्त पत्थर आ गया। लोग रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के पास आये और अर्ज़ किया कि ख़न्दक़ में एक सख़्त पत्थर आ गया है। आपने फ़रमाया, मैं उतरूँगा। और आपके पेट में भूक की वजह से पत्थर बँधा था; तीन दिन से हम लोगों ने कुछ नहीं खाया था। नबी (स0) ने एक कुदाल ली और पत्थर पर ऐसा मारा कि उसको बालू की तरह रेज़ा रेज़ा कर दिया। फिर मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की ऐसी हालत देखी कि मुझसे सब्र न हो सका। मैं अपनी बीवी के पास गया और पूछा कि तुम्हारे पास कुछ खाने को है? बोलीं, मेरे पास कुछ जौ है और एक छोटा बकरी का बच्चा है। मैंने बच्चे को ज़बह किया और बीवी ने जौ पीसा। मैंने गोश्त के टुकड़े काट कर हाँडी में डाले और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के पास उस वक़्त आया कि हाँडी चूल्हे पर चढ़ चुकी थी और करीब तैयारी के थी। और आँटा भी गूंधा जा चुका था। मैंने अर्ज़ किया या रसूलल्लाह! थोड़ा सा खाना तैयार कराया है, आप तशरीफ़ ले चलिए और अपने साथ दो चार आदमियों को भी लेते चलिए। आपने फ़रमाया, कितना खाना है? मैंने बताया। आपने फ़रमाया बहुत है और अच्छा है। अपनी बीवी से कह दो कि हाँडी न उतारें और रोटी उस वक़्त तक न पकायें जब तक मैं न आ जाऊँ। फिर आपने फ़रमाया, खड़े हो। तो मुहाजिरीन और अन्सार खड़े हो गये। मैं घर गया और बीवी से कहा, अरी नेकबख़्त! रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम तशरीफ़ ला रहे हैं, और आपके साथ मुहाजिरीन व अन्सार भी हैं। बीवी ने कहा क्या तुमसे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने पूछा था? मैंने कहा हाँ। (इतने में आप तशरीफ़ ले आये) फ़रमाया, आओ, दाख़िल होते जाओ, फ़िक्र न करो। फिर रोटी के टुकड़े करके उसपर गोश्त रखने लगे। जब हाँडी से निकाल चुकते तो हाँडी और तन्नूर को ढ़क देते थे। फिर अपने साथियों की तरफ़ बढ़ाते थे; फिर निकालते थे। बराबर तोड़ते और डालते रहे, यहाँ तक कि वह सब सेराब हो गये और बच भी गया। आपने फ़रमाया, तुम भी खाओ, और लोग आज बहुत फ़ाक़े से हैं, उनको भी भेजो। (बुखारी—मुस्लिम)

एक रिवायत में है कि हज़रत जाबिर (रज़ि0) ने कहा, जब ख़न्दक़ खोदी जा रही थी मैंने नबी (स0) को सख़्त भूक की हालत में देखा। मैं अपनी बीवी के पास आया और कहा, तुम्हारे पास कुछ है? मैंने नबी (स0) को बहुत भूक की हालत में देखा (है)। तो उन्होंने एक थैला निकाला उस में एक साअ़ जौ थे, और घर में एक छोटा बकरी का बच्चा था। उसको जबह किया और जौ को पीसा और वह मेरे फारिग होने तक फारिग हो गयीं। उसको टुकड़े करके हांडी में डाला। फिर मैं रसूलल्लाह (स0) की तरफ चला। मेरी बीवी ने कहा मुझे शरमिन्दः न करना। मैं आया और आप के कान में चुपके से कहा कि या रसूलल्लाह! (स0) हमने एक जानवर जबह किया है और एक साअ जौ भी पीसे हैं पस आप भी चलिए और कुछ लोग और भी रसूलुल्लाह (स0) ने पुकारा, ऐ ख़न्दक़ वालो! जाबिर (रजि0) ने दावत की, तुम सब आओ। फिर नबी (स0) ने फरमाया न हांडी उतारना और न रोटी पकाना जब तक मैं न आ जाऊँ। मैं आया और

रसूलुल्लाह (स0) लोगों के आगे आगे तशरीफ ला रहे थे। मेरी बीवी मुझे बुरा भला कहने लगीं। मैं ने कहा कि मैं ने आं हज़रत (स0) से वही अर्ज किया था जो तुम ने कहा था। मैं ने आटा निकाला। आप ने लुआबे दहन उसमें डाला और बरकत की दुआ की। फिर हांडी में भी लुआबे दहन डालकर बरकत की दुआ की और मेरी बीवी से फरमाया, रोटी पकाने वाली को बुलाओ, तुम्हारे साथ वह भी रोटी पकाएं और हांडी न उतारना, और उसे चूल्हे पर से ही निकालते रहो। खाने वाले एक हजार थे। खुदा की कसम सब ने खाना खा लिया और बच भी गया। वह लोग चले गये। और हमारी हाडी वैसे ही खदखदा रही थी। और रोटी भी वैसे ही पक रही थी।

हज़रत अनस (रज़ि0) से रिवायत है कि हज़रत अबू तलहः (रज़ि0) ने हज़रत उम्मे सुलैम से कहा, मैं ने रसूलुल्लाह (स0) की आवाजे मुबारक सुनी। कमजोर है। मैं समझता हूं भूक की वजह से है। तुम्हारे पास कुछ है? बोलीं, हां। फिर जौ की रोटियां निकालीं, उनको अपने दुपट्टा के एक कोने में लपेट कर मेरे बगल में छुपा दीं। और बाकी हिस्से का मेरे सर पर अमामा बांध दिया। रसूलुल्लाह (स0) की खिदमत में पहुंचा। आप उस वक़्त लोगों के साथ मस्जिद में तशरीफ फरमा थे। मैं आप के करीब खड़ा हो गया। आप ने फरमाया, क्या तुम को अबू तलहा (रजि0) ने भेजा है। मैंने कहा, जी हां। आप ने फरमाया खड़े हो और चलो और मैं आप से पहले चला और पहुंच कर अबू तलहा (रजि0) को खबर दी कि रसूलुल्लाह (स0) लोगों के साथ तशरीफ ला रहे हैं। हज़रत अबू तलहा (रजि0) ने कहा, ऐ उम्मे सलमा! रसूलुल्लाह (स0) लोगों के साथ तशरीफ ला रहे हैं। और हमारे यहां इतना खाना नहीं कि उनको काफी हो। उन्होंने कहा, अल्लाह और उसके रसूल ज्यादा जानते हैं। फिर हज़रत अबू तलहा (रजि0) पेशवाई को आगे बढ़े और रसूलुल्लाह (स0) कोअपने साथ लाये। आप ने फ़रमाया ऐ उम्मे सलमा! जो कुछ तुम्हारे पास हो लाओ तो वह वहां रोटियां लाईं। आप ने फरमाया, इनको तोड़ो। उन्होंने तोड़ा और उस पर बजाय सालन के घी निचोड़ दिया। और रसूलुल्लाह (स0) ने उसमें बरकत की दुआ की। और फरमाया, बारी बारी से दस दस को इजाजत दो, तो उनको इजाजत दी। वह आते गये और खाते गये। यहां तक कि सेर हो गये; और वह सत्तर या अस्सी आदमी थे।

(बुखारी व मुस्लिम)

एक रिवायत में है कि दस आते थे और दस जाते थे। और उन में से कोई नहीं बचा जो न दाखिल हुआ हो, न खाया और न सेर हुआ हो। और जब खाने को देखा तो वह उसी तरह था जैसा खाना शुरू करने से पहले था।

और एक रिवायत में है कि दस दस ने मिल कर खाया। ये अस्सी आदमी की जमाअत थी। फिर रसूलुल्लाह (स0) ने खाना नोश फरमाया। और आपके बाद आपके घर वालों ने। फिर बच गया। और एक रिवायत में है कि बचा हुआ अपने हमसायों को पहुंचाया।

और एक रिवायत में हज़रत अनस (रजि0) का बयान है कि एक दिन मैं रसूलुल्लाह (स0) के पास आया और आपको आपके साथियों के पास बैठा हुआ पाया। आपके पेट में पट्टी बंधी थी। मैं ने आप के बाज़ साथियों से पूछा कि रसूलुल्लाह (स0) ने पेट में पट्टी किस लिये बांधी है? लोगों ने कहा, भूक की वजह से। मैं हज़रत अबू तलहा (रज़ि0) के पास आया, (वह उम्मे सलमा के शौहर थे) और अर्ज किया, ऐ बाप, मैंने रसूलुल्लाह (स0) को देखा, आप के पेट पर पट्टी बंधी थी। लोगों से सबब पूछा। मालूम हुआ कि भूक की वजह से। हज़रत अबू तलहः (रज़ि0) मेरी मां के पास आये और पूछा तुम्हारे पास कुछ खाने को है? उन्होंने कहा कुछ रोटियों के टुकड़े हैं और खुजूरें। अगर रसूलुल्लाह (स0) तनहा तशरीफ लाएं तो हम उनको सेर कर देंगे; और अगर लोगों के साथ तशरीफ लाये तो कमी पड़ जायेगी। उसके बाद पूरा किस्सा बयान किया (जो ऊपर गुजरा)।

❑❑

नया साल मुबारक हो।

इस्लामी अक़ाइद

– मौलाना मुजीबुल्लाह नदवी

अकाइद आम तौर पर इस्लामी शरीअत में उन हक़ीकतों पर ईमान लाने को कहते हैं जिन को हमारी जाहिरी आखें नहीं देख सकतीं, बल्कि उन का इल्म हम को नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर उतारी गई वह्य से हुआ है। यह वह्य अल्लाह तआ़ला हज़रत जिबरील के ज़रीअे तमाम अंबिया पर नाज़िल फरमाता रहा है और आखिर में इस की तक्मील (पूर्ति) हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर हो गई। अब आप के बअ़द कियामत तक वह्य का नुजूल नहीं हो सकता। वह्य के जरीअे हमें आलमे ग़ैब के जिन हक़ाइक (वास्तविकताओं) का इल्म हुआ है उन में सब से पहली चीज अल्ला तआला की ज़ात और उस की सिफात पर ईमान व यकीन रखना जरूरी है। फिर उस के बअद मलाइका पर और अल्लाह तआला की किताबों पर और उस के रसूलों पर ईमान लाना जरूरी है और फिर आखिरत के आलम पर यअनी क़ब्र की जिन्दगी से कियामत तक और उस के बअ़द जन्नत व दोज़ख के फैसले तक जो कुछ पेश आने वाला है जिस की इत्तिलाअ अल्लाह के आखिरी नबी हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने दी है उस सब पर यकीन रखना एक मुअ्मिन के लिये जरूरी है। कुर्आने पाक में इन तमाम चीजों पर यक़ीन रखने का बार बार जिक्र आया है। जैसे ;

अनुवाद : एअतिक़ाद रखते हैं रसूल उस चीज़ का जो उनके पास उन के रब की तरफ से नाज़िल की गई है और मुअमिनीन भी सब के सब अकीदा रखते है अल्लाह के साथ और उस के फिरिश्तों और उस की किताबों के साथ और उस के पैगम्बरों के साथ। (अलबकरह :285)

अनुवाद : लेकिन नेकी तो यह है कि कोई शख्स अल्लाह पर ईमान रखे और कियामत के दिन पर और फिरिश्तों पर और (अल्लाह की) किताबों और पैगम्बरों पर। (अलबकरह :177)

अनुवाद : और वह लोग आखिरत पर यकीन रखते हैं। (लुकमान :4)

एक बार हज़रत जिब्रील अलैहिस्सलाम रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की खिदमत में तशरीफ लाए और आप से बहुत से सुवालात किये उन में से एक सुवाल यह था :

अनुवाद : आप मुझे ईमान की तफ्सील बताइये आप ने फरमाया यह कि ईमान ले आओ अल्लाह पर, मलाइका पर और अल्लाह की किताबों पर और अल्लाह के रसूलों पर, आखिरत के दिन पर और बुरी भली तक्दीर पर।(बुखारी व मुस्लिम)

इस से मअलूम हुआ कि दाइर–ए–ईमान में दाखिल होने के लिये इन छे चीजों पर ईमान लाना और एअ़तिकाद रखना ज़रूरी है। यही इस्लाम के बुन्यादी अकाइद है। अगर कोई इन में से किसी एक चीज़ पर भी ईमान न लाए या इन्कार कर दे वह दाइर–ए–ईमान से खारिज समझा जाए गा।

अनुवाद : जो अल्लाह का उस के फिरिश्तों का, उस की किताबों का और उस के रसूलों और आखिरत के दिन का इन्कार करे वह बड़ी सख्त गुमराही में है। (अन्निसाअ :136)

अब हर एक की अलग अलग तफ्सील की जाती है :–

अल्लाह की जात पर ईमान

जहां तक अल्लाह तआला की ज़ात का तअल्लुक है इन्सानों ने किसी ज़माने में इस का इन्कार नहीं किया जिन दहरियों ने इन्कार भी किया तो बस जाहिरी जबान उन की बोलती रही अन्दर से उन का दिल कहता रहा कि खुदा है चुनांचि इस्टालन ने मरने के वक़्त लोगों से ख्वाहिश जाहिर की थी कि गिर्जाओं

और मस्जिदों में उस के लिये दुआ की जाए। अल्बत्ता इन्सानों से गलती उस की सिफात के बारे में होती रही है और आज तक हो रही है। खुद मक्के के काफिर यह कहते थे कि इस सारी कायनात (सृष्टि) की तख्लीक़ (रचना) अल्लाह तआला ने की है और बड़े बड़े अम्र (कार्य) उसी के ज़रीअे अंजाम पाते हैं। कुर्आन में है :

अनुवाद आप इन से सुवाल करें कि इन आसमानों और ज़मीन को किसने पैदा किया है और सूरज और चांद को किस ने बनाया है तो वह कहें गे अल्लाह फिर यह कहां भटकते जा रहे हैं? (अलअन्कबूत :61)

अनुवाद : अगर आप इन से सुवाल करें कि पानी कौन बरसाता है? जिस से मुर्दा जमीन जिन्दा हो जाती है तो जवाब देंगे अल्लाह। आप कहये सारी तअ़रीफ़े अल्लाह के लिये हैं अक्सर लोग अक्ल से काम नहीं लेते। (अन्कबूत ;36)

मगर इसी के साथ वह यह कहते थे और कहते हैं कि इस कायनात (ब्रह्मांड) की तख्लीक़ (रचना) के बअ़द अल्लाह तआला ने इस कायनात का इन्तिजाम फिरिश्तों और कुछ नेक लोगों, देवियों, देवताओं के सिपुर्द कर दिया है। इस गलत फहमी में मुब्तला हो कर (इस भ्रांति में फंस कर) लोग खुदा के साथ उन की भी इबादत करने और उन के आगे नज़र व नियाज़ चढ़ाने लगे, इस तरह शिर्क की गुमराही में मुबतला हो गये। कुर्आने पाक ने इस अकीदे की सख़्त तदीर्द (खन्डन) की है और इस को इतना बड़ा जुल्म करार दिया है कि उस के (शिर्क करने वाले के) बख्शे जाने की कोई उम्मीद नहीं है :–

अनुवाद :– खुदा का शरीक ठहराना सब से बड़ा जुल्म है (लुक्मान ;13) अल्लाह तआला शिर्क को कभी मुआफ़ नहीं करेगा (यअनी जिस की शिर्क पर मौत हुई उस को मुआफ नहीं करेगा, वर्ना इस जिन्दगी में शिर्क से तौबा करने वाला भी मुआफ़ किया जाएगा।) इसके अलावा जिस गुनाह को चाहेगा मुआफ करदेगा (अन्निसाअ;48)

यही नहीं बलिक शिर्क को सब से बड़ी गुमराही और ज़मीन में फसाद और बिगाड़ का सबब करार दिया और बार बार यह जेहन नशीन कराया कि जिस तरह पूरी कायनात की तख्लीक़ में कोई शरीक नहीं उसी तरह कायनात का नज़्म व नसक भी वह तन्हा अंजाम दे रहा है:

अनुवाद : अच्छी तरह सुन लो कि उसी ने सारी कायनात को पैदा किया है और वही चला रहा है और सारे मुआमलात उसी के हाथ में हैं। (अअ़राफ;54)

आयतुल्कर्सी में इसी तसव्वुर को बड़ी वजाहत से जेहन नशीन कराया गया है :

अनुवाद : अल्लाह जिस के अलावा कोई मअ़बूद (उपास्य) नहीं वह जिन्दा है और सारी दुन्या के निजाम को थामे हुए है। उस को न तो ऊंघ पकड़ती है और न नींद, उसी के कब्ज़े में सारे आसमान और ज़मीन हैं। उस की इजाज़त के बिगैर उस के हुजूर में कोई सिफारिश नहीं कर सकता वह उन के आगे और पीछे की हर बात से वाकिफ हैं। उस के इल्म से कोई चीज़ बाहर नहीं हैं उस की बादशाहत सारे आसमानों और जमीन से जियादा वसीअ़ (विस्तृत) है और आसमानों और जमीन की हिफाज़त से वह आजिज़ (असमर्थ) नहीं है, उस की जात बहुत बड़ी और अज़ीम है। (अलबकरह;255)

सूर–ए–अनआम में है:

अनुवाद : खजान–ए–गैब की सारी कुंजियां अल्लाह तआला के हाथ में है और उन को उस के अलावा कोई नहीं जानता। खुश्की और तरी में जो कुछ है वह सब अल्लाह तआ़ला ज़ानता है। कोई पत्ता ज़मीन में नहीं गिरता मगर वह जानता है और कोई दाना जो जमीन की तहों में डाल दिया जाता हो और खुश्क या तर चीज ऐसी नहीं जो एक वाजेह (स्पष्ट) किताब में मौजूद न हो। (अनआम;59)

यही अकीदा सूर–ए–फातिहा, सूर–ए–इख़्लास और बे शुमार आयतों में ज़ेहन नशीन कराया गया है कि खुदाए कुद्दूस न तो हमारी दुन्या और इस पूरी कायनात (समस्त ससांर) के पैदा करने में किसी का मुहताज है और न उस के पूरे निजाम को चलाने में उसे किसी मदद की जरूरत है मलाइका, अंबिया और रसूलों की हैसीयत कासिद और

पैगाम्बर (सन्देष्टा) की है जिन के ज़रीअे अल्लाह तआला हमारी मादी और रूहानी जिन्दगी में रहनुमाई और शहादत का काम लेता है, मगर उन को ख़ल्क़ (पैदा करने) और अम्र (दुन्या के निजाम चलाने) में कोई दख्ल नहीं होता।

अगर बन्दे के जेहन में यह बात अच्दी तरह बैठ जाए कि पूरी कायनात (समस्त ब्रह्माण्ड) और फिर उस में इनसानी जिन्दगी की तख्लीक़ (रचना) और नश्वनमा और परवरिश (पालन पोषण) के जितने बुन्यादी जरायअ (मौलिक साधन) हैं उन का मंबा (उदगम) खुदा की जाते वाहिद है। मिट्टी हवा पनी, फजा, रौशनी और मौसमों की साजगारी (अनुकूलता) यह सब इन्सानी जिन्दगी के बुन्यादी जरायअ (मौलिक साधन) हैं इन मे से किसी एक के अदना भाग (न्यूतम भाग) की पैदाइश या उन में जो हम आहंगी (समन्वय) है, उन को बाकी रखने में कोई दूसरा उस का शरीक नहीं है। तो उस जाते कुद्सी (पावन व्यक्ति) के अलावा न तो किसी हस्ती के सामने उसका हाथ फैलेगा और न उस का सरेनियाज किसी के सामने झुकेगा, और न किसी गैरुल्लाह के दर की जब्हसाई (माथा टेकना) करके इन्सानी शरफ व इम्तियाज़ को खाक में मिलाएगा बल्कि उस की जबान से बे इख्तियार यह आवाज़ बुलन्द होगी :–

अनुवाद : अगर अल्लाह किसी पर अपनी रहमत का दरवाजा खोल दे तो उस को कोई बन्द करने वाला नहीं है और अगर बन्द करदे तो कोई खोल नहीं सकता। (फातिर;2)

अनुवाद : ऐ अल्लाह हम तेरी ही इबादत करते हैं और तुझ ही से मदद मांगते हैं। (अलफातिहः)

तौहिद का यही तसव्वुर बे शुमार अहादीसे नबवीया में ज़ेहन नशीन कराया गया है। अहादीसे नबवीया में खास तौर से अस्माए हुस्ना (अल्लहा तआला के अच्छे नाम) का जिक्र है वह इसी तौहिद के तसव्वुर को जेहन नशीन करने के लिये है ताकि खुदाए तआला की कुदरत व इख्तियार की हमागीरी (सर्वत्ता) मअ़लूम हो जाए, चन्द अस्माए हुस्ना मुलाहज़ा हों :

अलअहदु (अकेला) अलवाहिदु (एक)अर्रहमानु (रहम करने वाला) अर्रहीम (बड़ा कृपालू) अर्रब्बु (प्रति पालक) अलख़ालिकु (पराभूतकारी) अलह्य्यु (चैतन्य) अलक़य्यूमु (अविनाशी) अस्समदु (तुष्ट रूप) अलक़ादिरु (समर्थ) अज़्ज़ारु (सध ांतक) अन्नाफ़िअु (सिद्ध दाता) अस्समीअु (सर्वस्रोता) अलबसीरु (सर्व दृष्टा) अस्सलामु (कल्याण कारी) अगर सिर्फ़ अल्लाह तआ़लाके सिर्फ इन चन्द अस्माए हुस्ना का मफ्हूम समझ लिया जाए तो उस की तौहिद खालिस अच्छी तरह दिल व दिमाग में पैवस्त हो जाए और शिर्क की सभी जड़ें कट जाएगी।

इसी तरह फर्ज इबादात मसलन नमाज़, रोजा, हज्ज, जकात बगैरह में जो नीयत की जाती है और उन सब में जो दुआएं पढ़ी जाती हैं वह सब अकीद–ए–तौहिद का मज़हर (सूचक) हैं। मसलन आंप नमाज़ को लीजिये इस में सना के अल्फाज़ और सूर–ए–फ़ातिहा की एक एक आयत, रकूअ़, व सुजूद और कौमा की तस्बीहात, जल्सा की दुआ यह सब तौहीद के तसव्वुर को बदर्ज–ए–अतम्म (पूर्णतया) जेहन नशीन कराती हैं। इसी तरह रोज़े की सारी अहम्मीयत उसी वक़्त है जब ईमान और एहतिसाब के साथ रखा जाए। यअनी अल्लाह तआला के इस (रोजा रखने) हुक्म पर बन्दे को यकीन हो और उस से अज्र व सवाब की उम्मीद हो, रोजा के इफ्तार के वक़्त जो दुआ पढ़ी जाती है, उस में यह तसव्वुर फिर ताजा हो जाता है कि ऐ अल्लाह मैंने आप ही के लिये रोजा रखा और आप ही की दी हुई रोजी से रोजा इफ्तार किया। (यअनी रोजा खोला)

इसी तरह ज़कात में भी यही रूह कार फरमा है। अगर आदमी लाख रूपया खर्च कर दे मगर नाम और दिखावे के लिये खर्च करे, उसमें अल्लाह की रजा पेशेनजर न हो तो उस माल का खर्च करना उस के लिये वबाल (आपत्ति) है। इस लिये हर जगह हर काम में अल्लाह के लिये किये जाने की कैद लगी हुई है और इसी लिये खुदा की राह में खर्च करने को अल्लाह तआला ने कर्ज से तअ़बीर किया है। यअनी उसके अज्र व सवाब और मुआवज़े की जिम्मेदारी अल्लाह तआला ने अपने जिम्मे ले ली हैं।

बाक़ी पृष्ठ 27 पर

उन्नीसवीं किस्त

भारत का संक्षिप्त इतिहास

— सैयद अबूज़फर नदवी

मुअ़बर के बादशाह

मुहम्मह तुगलक के जमाने में सरहिन्द (पंजाब) का एक कसबा 'कैथल' जो आज भी है जहां राजपूतों के अतिरिक्त सैयदों का खानदान भी आबाद था। उसी खनदान में एक व्यक्ति सैयद हसन नामी था। किसी जरिये से यह सुलतान मुहम्मद तुगलक के दरबार में पहुंचा और उन्नति करता हुआ सरदारों के पद पर पहुंचा गया दकिन में जब कई बार बगावत हुई तो मुहम्मद तुगलक ने जिन क्षेत्रों में योग्य अफसरों को नियुक्ति किया। उसी समय मुअबर पर सय्यद हसन कैथली नियुक्ति हुआ। कुछ समय के बाद सुलतान मुहम्मद तुगलक जब कन्नोज में था, उस समय उस को सूचना मिली कि सैयद हसन ने मुअबर में बगावत की है। सुलतान पहले दिल्ली आया और सैयद हसन के खानदान को बन्दी बनाया। फिर एक सेना लेकर तिलंगाना पहुंचा था कि बीमार होकर वापस आया और सैयद हसन स्वतंत्र हो गया।

सुलतान सैयद हसन शाहः—

सैयद हसन ने 1334 ई0 (735 हि.) में सवतंत्रता प्राप्त कर लेने के बाद अपना लकब (पदवी) जलालुद्दीन अहसन शाह रखा और सल्तनत के प्रबन्ध में यस्त हो गया। अपने नाम का सिक्का और खुतबा (व्याख्यान जो जुमे की नमाज में दिया जाता है) जारी किया। सैयद अहसन पांच वर्ष तक शासन करता रहा। उसका पूरा जीवन सल्तनत को मजबूत बनाने और होसील खान से लड़ने में व्यतीत हुआ। उसी युग में विजय नगर हिन्दू राज्य उन्नति कर रहा था और दूसरी तरफ दिल्ली के सुलतानों के हमले का डर लगा रहता था। स्वतंन्त्र होने के बाद अपने दरबार के सरदारों को वह संभाल न सका क्यों कि पांच ही साल के बाद 1339 ई. (740 हि.) में उन लोगों ने सैयद अहसन शाह को कत्ल कर दिया।

सुलतान जलालुद्दीन अदूजीः—

सैयद अहसन शाह के बाद उस का लड़का अमीर मुअ़बर का बादशाह न हो सका और दरबारी सरदारों में से अमीर अदूजी बादशाह हुआ। उसने तख्त पर बैठ कर अलाउद्दीन के नाम से अपना सिक्का और खुतबा जारी किया। उसने पहले सल्तनत को मजबूत बनाया। फिर पड़ोस के एक हिन्दू राजा पर हमला किया और फतह पाकर मदुरा वापस आया। कुछ दिनों के बाद फिर हमला किया लेकिन लाड़ई में एक तीर से शहीद हो गया।

सुलतान कुतबुद्दीनः—

सुलतान अलाउद्दीन के बाद उस का दामाद फिरोज सुलतान कुतबुद्दीन के नाम से तख्त पर बैठा मगर दरबार के सरदार उस के बुरे व्यवहार के कारण अप्रसन्न होगये और इसी 1339 ई. (740 हि.) के अन्त में 40 दिन के बाद उसकी हत्या कर डाली।

सुलतान गयासुद्दीनः— कुतबुद्दीन के बाद मुहम्मद दामगान तख्त का मालिक हुआ। यह दिल्ली में मालिक मजीरूद्दीन अबी रजा के सवारों में नौकर या फिर अमीर हाजी बिन सैयद अहसन शाह का मुलाजिम हो कर मुअ़बर आते समय उस के साथ हो गया और यहां धीरे धीरे अमीरों के पद तक उन्नति पा गया। जब तख्त पर बैठा तो अपना नाम सुलतान गयासुद्दीन रखा औरं शाही खानदान से दोस्ती काइम रखने के लिए सैयद अहसन शाह की छोटी लड़की से शादी कर ली। 1292 ई. (692 हि.) में हुसील खानदान का एक राजा वीर बलालदेव तृतीय नामी था 1390 ई. (610 हि.) में जब मलिक काफूर ने घोर समुद्र फतह कर लिया तो उस ने "तनूर" नामी स्थान को अपनी राजधानी बनाया। कुछ दिनों के बाद सल्तनत के कल पुर्जो को दुरूस्त कर के बड़ा शक्तिशाली हो गया। उस के पास एक लाख फौज थी उस में 20 हजार मुसलमान भी थे। 1346 ई. (743 हि.) में बलाल

देव तृतीय ने मुअबर पर हमला कियां सुल्तान गयासुदीन के पास केवल छःहजार सिपाही थे। उस में से भी आधे बिना सामान। "क्यान" के स्थान पर दोनों की लड़ाई हुई। मुसलमान पराजित हो कर मदूरा चले आये राजा ने 'क्याना' की घेरा बन्दी कर ली। शहर वाले दस महीने तक किलाबन्द हो कर मुकाबला करते रहे। जब उन के पास दो हफ्ते का खाने पीने का सामान रह गया तो सुलतान ग्यासुद्दीन से मदद मांगी। सुलतान तीन हजार सिपाही लेकर मदुरा से रवाना हुआ शाम के समय राजा से मुकाबला हुआ। बड़ी सख्त लड़ाई के बाद राजा की फौज भाग गई और राजा बन्दी बन कर कत्ल हुआ। उस के बाद सुलतान बड़े पैमाने पर जंगी तैयारी में व्यस्त था कि शहर में बीमारी फैल गई। आखिर 1344 ई. (745 हि.) में खुद सुलतान भी चल बसा।

उस के समय में समुद्री बेड़ा भी बड़ा शक्ति शाली था। इस के समुद्री बेड़ा का जलसेनाध्यक्ष ख्वाजा सरवर था।

सुलतान नासिरूद्दीन महमूदः– सुलतान ग्यासुद्दीन के बाद उस का भतीजा महमूद सुलतान नासिरूद्दीन के नाम से तख्त पर बैठा ग्यासुद्दीन ने अपने सामने ही उस को उत्तराधिकरी (वलीअहद) बना दिया था। यह पहले दिल्ली में सुलतान मुहम्मद तुगलक का मुलाजिम था। जब उस को यह सूचना मिली कि उस का चचा मुअबर का बाद–शाह हो गया है तो फकीरों का भेस बदल कर वह दिल्ली से मुअबर पहुच गया। सुलतान हो जाने के बाद उसने सल्तन के प्रबन्ध की तरफ ध्यान दिया। सब से पहले उसने वजीर को निलम्बित कर के मलिक बदरूद्दीन को वजीर बनाया और जब उस का देहान्त हो गया तो ख्वाजा सरवर को जो जल सेनाध्यक्ष था मंत्री पद सपुर्द कर दिया। और ख्वाजा जहान की उपाधि (खिताब) दिया इस के बाद से मुअबर का इतिहास सिक्कों की सहायता से भी मालूम नहीं हो सका। इस समय तक यह मालूम नहीं हो सका कि नासरूद्दीन महमूद का कब देहांत हुआ।

मुबारक शाह फखरूद्दीनः–

आदिल शाह के बाद मुबारक शाह शाहजहानी के कई सिक्के मिले हैं। जिस से मालूम हुआ कि उस ने अपनी उपाधि फखरूद्दीन रखी थी।

उस ने 1368 ई. (770 हि.) तक दस वर्ष अवश्य हुकूमत की क्यों कि 1359ई.(769 हि.) के पहले का कोई सिक्का उस के नाम के सिवा उस समय तक नहीं मिला है।

सुलतान अलाऊद्दीनः–

उस का नाम सिकन्दर था। तख्त पर बैठने के बाद उस ने अपना नाम अलाऊद्दीन रखा। यह शायद मुअबर का आखिरी बादशाह है। उस का पहला सिक्का 1372 ई. (774 हि.) का मिला है। इसलिए उस की हुकूमत का जमाना उस सन् से माना जाता है और आखिरी सिक्का 1377 ई.(779 हि.) का है जिस से छःवर्ष तो उस की सल्तन अवश्य मानी जा सकती हैं इस काल में विजय नगर की हिन्दू हुकूमत बहुत शक्तिशाली और जबरदस्त हो गई थी। चुनानचि राजा हरी द्वितीय जिस का जमाना 1379 ई.(789 हि.) से 1399 (809 हि.) तक अवश्य है और विजय नगर का तीसरा राजा है। उस ने मुअबर का उत्तरी भाग फतह कर लिया। फिर बुकाराय द्वितीय जो विजय नगर का चौथा राजा था वह शेष तमाम मुअबर कारोमण्डल तक अपने कब्जे में ले आया और 690ई. (1378 हि.) तक मुअबर के बाद शाहों का अन्त हो गया।

मुअबर के बदशाहों का कामः–

मुअबर की सल्तनत 45 वर्ष रही। इस थोड़े समय में अधिकतर आपस के झगड़े और पड़ोसी राज्यों के साथ लड़ाई में व्यतीत करना पड़ा फिर भी उन्हों ने चन्द कारनामें यादगार छोड़े है।

मुअबर के बादशाहों की राजधानी मदूरा थी। सैयद हसन ने इस को बसाने में बड़ी कोशिश की। यहां की इमारतों की बुनयाद दिल्ली के नमूने पर रखी और अच्छी अच्छी ऊंची इमारतें बनवाई। इस के बाजार और गलियां बहुत चौड़ी थीं। मदूरा की तरह पटन भी बड़ा शहर था और उस को भी उसने खूब आबाद किया था।

उन की फौजी ताकत दो तरह की थी। थल सेना और जल सेना परन्तु अधिक शक्तिशाली नहीं थी।

पड़ोसी राज्यों के पास एक एक लाख फौज थी उस के मुकाबले में मुअबर के बादशाहों की छःसात हजार फौज कुछ जियादा हैसियत नहीं रखतीं उस पर भी जब कोई योग्य बादशाह मुसलमानों में जिहाद का जोश पैदा कर देता तो यह मुट्ठी भर फौज बड़ी बड़ी फौजो पर फतह पा जाती।

उन की जल सेना अच्छी थी। पटन उन का बन्दरागाह था। यह नगर समुद्र के तट पर कावेरी नदी के दहाने (मुख) पर आज भी मौजूद है। व्यापार के कारण सारी दुन्या के जहाज यहां ठहरते। उन का जंगी बेड़ा भी इसी जगह रहता था। बन्दरगाह के निकट लकड़ी का एक अनोख पुल तैयार किया था। दुश्मन का जब डर होता तो जहाज वाले उस पर चढ़ जाते और दुश्मन का मुकाबला कर के वापस कर देते। उन का जल सेनाध्यक्ष ख्वाजा सरवर नामी एक योगय व्यक्ति था। बादशाह का जहाज यत्रियों को लेकर यमन देश जाया करता था।

हर नगर में काजी खतीब (व्याख्या दाता) नियुक्ति थे। मर्दो के अतिरिक्त औरतो में भी शिक्षा का चलन था और सूफी इस्लाम के प्रचार में हर तरफ लगे हुए थे। उन के सिक्के अधिक तर दिल्ली नमूने के ढलते थे। व्यापारी कारोबार की उन्नति से उन की माली हालत भी अच्छी रहती। उन के भोजन में चावल खटाई आवश्यक वस्तु थी। कड़ी गर्मी के कारण साधारण लोग कपड़े अधिक प्रयोग नहीं करते थे मगर अमीर कपड़ो का अधिक ख्याल रखते। अमामा (साफा) सब मुसलमान बान्धते। बादशाह बाहर निकलने के समय अमामा और चादर जरूर प्रयोग करते। औरतें केवल साड़िया पहेनती।

फौजी जरूरतों के लिए घोड़ विदेशों से आते अधिकतर फारस की खाड़ी से व्यापारी लाकर बड़ी कीमत पर बेचते। मुसलमानों ने इस देश में मेवे की खेती को खूब रिवाज दिया। चुनानचि अंगूर और अनार बहुत अधिक मात्रा में होते थे।

(जारी)

❑❑

कुरआन की शिक्षा.....

और उसको जाहिर न करे। अल्गरज़ अमानत अदा करने के इस कुर्आनी हुक्म में इस तरह की तमाम बातें दाखिल हैं।

इसी तरह कुर्आने–मजीद में अदा–ए–अमानत के इस हुक्म के अ़लावा इस की तरग़ीब इस तरह भी दी गयी है कि अमानतें ठीक–ठीक अदा करने वालों को फ़लाहयाब और जन्नती बतलाया गया है। चुनांचे सूरए– मुअ्मिनून और सूरए–मआ़रिज् के पहले रूकूअ् में फ़लाह (कामयाबी) पाने वालों और जन्नत में जाने वालों के औसाफ़ ज़िक्र करते हुये फ़र्माया गया है। कि:–

तर्जमाः– और जो अपनी अमानतों और अपने अ़ह्द का पास करते हैं (वचन पूरा करते हैं।)

कुर्आने–मजीद में इस अमानत की सिफ़त की अ़ज़मत को इस तरह भी ज़ाहिर किया गया है कि इस को अल्लाह के मुक़द्दस (पवित्र) रसूलों (देव दूतों) की और मुक़र्रब तरीन (अल्लाह के समीपतम) फ़रिश्ते जिब्रईल की खास सिफ़त बताया गया है। सूरए–शुअ् राअ में कई पैग़म्बरों के ज़िक्र में फ़र्माया गया है कि उन्हों ने अपनी उम्मतों (अनुयायी समुदाय) से कहाः–

तर्जमाः– मैं तुम्हारे लिये अल्लाह का अमानतदार पैगम्बर हूँ। मेरा ख़ास पैग़ाम यह है कि अल्लाह से डरो और मेरे लाये हुये हुक्मों की फ़रमां बरदारी करो।

और कुर्आने–मजीद के बारे में इसी सूरए–शुअ्रॉअ में एक जगह फ़र्माया गया हैः–

तर्जमाः– ले के उतरा है इस को रूहुल–अमीन (यानी अल्लाह का ख़ास अमानतदार फ़रिश्ता, जिब्रईल)

पस अल्लाह के जिन बन्दों की यह चाहत और आरज़ू (अभिलाषा) हो कि अल्लाह के नबियों और रसूलों और उस के मुक़र्रब फ़रिश्तों से उन को कोई निस्बत (तअल्लुक) हासिल हो और उन के पाकीज़ा औसाफ़ व अख़लाक़ में उन का कोई हिस्सा हो तो उन्हें चाहिये कि वे अमानत की सिफ़त को अपनायें और जिस का जो हक उन के जिम्मे हो और जो उन की डयूटी हो उस को पूरी अमानत दारी और दियानत दारी के साथ अदा करें।

❑❑

एक तकरीर की तल्ख़ीस (संक्षेप)

(उज़मा सुलतान भोपाली की लम्बी तक़रीर का मक़सदी ख़ुलासा-समपादक)

- उज़मा सुलतान भोपाली

मिठाइयों का ताजिर नाना प्रकार की स्वादिष्ट मिठाइया अपनी दूकान पर इस तरह सजाता है कि देखने वालों के मुँह में पानी आता है और उन की जेब इजाजत देती है तो वह मिठाई खरीद कर उस के स्वाद से आनन्दित होते हैं परन्तु आज तक नहीं सुना गया कि जिन की जेब में मिठाई खरीदने की सकत न हो वह मिठाई पाने के लिये व्याकुल हुए हो अपितु उन्हों ने सन्तोष से काम लिया।

इस तरक्की के दौर में दुसरे की जेब से पैसा खीचने के तरीकों ने भी खूब तरक्की की है। यह मिठाइयों की सजी दुकानें यह ताजा फल और ड्राई फ्रूट की मुंह में पानी आने वाली सजावटें यह नाना प्रकार के सोने, चान्दी हीरे जवाहरात से बने गहनों के शोरूम, यह भांति भांति के मलबूसात (वस्त्रों) के शो रूम, यह किस्म किस्म की दो पहयों और चार पहयों के शोरूम किस बात की दअवत देते है? यही ना कि जिन की जेब में पैसा हो, जिन की तिजोरियां इजाजत दें वह इन सजी दूकानों और शो रूमों से अपनी पसन्द की चीज खरीदें लेकिन आज तक नही सुना गया कि इन शोरूमों और मारकेटों की पसन्दीदा चीजें न पा सकने पर कोई किसी से लड़ पड़ा हो, किसी की जान लेली हो, पागल हो गया हो, मजनूँ बन गया हो। लेकिन इस के बराखिलाफ एक नव जवान खूब सूरत औरत को देख कर अकसर ऐसा हुआ है कि एक मर्द उसे ना पा सकने पर पागल हो गया है, शीरीं फरहाद और लैला मजनूँ जैसे सैकड़ों किस्से मुआशेर (समाज) में मशहूर हैं। इसी तरह कितने नव जवानों ने अपनी महबूबा को ना पा सकने पर उस के चहरे को तेजाब से भून दिया, क़भी उस की जान ले ली कभी अपनी जान देदी, कभी रकीब की जान ले ली कभी समाज ने दोनो को मिलने पर पाबन्दी लगाई तो दोनों ने खुदकुशी कर ली। किस दिन और कौन अखबार है जो इस तरह की खबरों से खाली रहता हो। जिन मुलकों में इस तरह की दययूसीयत (बीवी, मां, बहन, बेटी, की जिन्सी आजादी पर राजी होना) है वहां का हाल देखा जा सकता है। जवान तबका जिन्सी लज्जतों से जरूर लुत्फ अन्दोज हो रहा है मगर उस की जिन्दगी से सुकून गायब है और हसीन तरीन औरत बूढ़ी होकर बेटी बेटों की खिदमत, पोती पोतो की मुहब्बत, शौहर के प्यार से महरूम (वचिंत) दुन्या ही में जहन्नम झेलती है। समाज की इन सम्सयओं का समाधान औरतों की मुशकिलात का हल क्या उन लोगों के पास है जो औरतों की आजादी का खोखला नअरा लगा कर ना समझ औरतों को जहन्नम में ढकेल देना चाहते है? हरगिज नहीं। इन मुशकिलात का वाकई (वास्तविक) हल सिर्फ और सिर्फ औरत के खालिक (विधाता) के पास है वह जो औरत का भी खालिक है और मर्द का भी और सारी कायनात (सृष्टि) का भी। उस ने अपने पैगम्बरों (सन्दाष्टाओ) के जरीअे हर जमाने में अपने बन्दों की रहनुमाई की है। फिर सब के आखिर में उपने आखिरी नबी के जरिअे रहती दुन्या तक के लिये कामिल व मुकम्मल रहनुमाई भेजी। उस खालिक व मालिक ने अपने महबूब नबी को हुकम दिया कि कह दीजिये ईमान वालों से कि वह अपनी निगाहें नीची रखा करें और अपनी शर्मगाहों की हिफाजत किया करें यह निगाहों का नीचा रखना और शर्मगाहों की हिफाजत करना उन के लिये बड़ी पाकीजगी की बात है बेशक लोग जो कुछ किया करते हैं, अल्लाह उस सब से बाखबर है। और आप कह दीजिये ईमान वालियों से कि वह अपनी निगाहें नीची रखें और

अपनी शर्मगाहों की हिफाजत करें और अपने सज धज को जाहिर न करें मगर हाँ जो उन में से मजबूरन खुला रहता है , और अपने दुपट्टे अपने गरेबानों पर डाल लिया करें यअनी सीनों को ढांक कर ओढ़ा करें और अपनी सजावट और हुस्न को किसी पर जाहिर न करें, मगर हां अपने खाविन्दों पर या अपने बाप या ससुर या अपने बेटों पर या अपने (शौहर से) सौतेले बेटों पर या अपने भाइयों पर, या भाइयों के बेटों पर, या अपनी बहनों के बेटों पर या अपनी दीनी बहनों पर या अपनी बांदियों पर या जिंसी ख्वाहिशात से खाली बे गरज खादिम मर्दों पर या अपने उन नादान बच्चों पर जो औरतों की छुपी चीजों से वाकिफ नहीं हैं, और अपने पैर जोर से न रखें कि उन के वह जेवर (झनकार) से पहचाने जाएं जिन को वह छुपाती हैं, और ऐ ईमान वालो तुम सब अल्लाह के दरबार में तौबा करो ताकि फलाह पाओ। (24: 30,31) अल्लाह तआला फरमाते है: ऐ नबी आप अपनी बीवियों और बेटियों और दूसरे मुसलमानों की बीवियों से फरमा दीजिये कि वह अपनी चादरें ऊपर से ओढ़ कर थोड़ी सी मुंह के आगे लटका लिया करें (यअनी घूघंट बना लिया करें) इस से (उन का शरीफ होना) पहचाना जा सकेगा, और वह सताई न जाएंगी और अल्लाह बहुत बख्शने वाला बड़ा मेहरबान है। (33:59)

अल्लाह तआला ने नबी की बेटियों (यअन हमारी मांओ) से फरमाया ऐ नबी की औरतो तुम आम औरतों की तरह नहीं हो, तुम तकवे की पाबन्द रहो तुम गैर मर्दों से लचक के साथ बात न किया करो कहीं ऐसा न हो कि वह शख्स जिस के दिल में खराबी है गलत खयाल काइम कर बैठे और नपी तुली बात किया करो और तुम अपने घरों में रहो और पिछली जाहिलीयत की तरह अपनी सज धज दिखाती न फिरो, और नमाज की पाबन्द रहो, जकात अदा करती रहो और अल्लाह चाहता है कि तुम से हर किस्म की गन्दगी दूर रखे और तुम को खूब पाक साफ रखे। (33: 32,33) अल्लाह तआला सहाबा को हुक्म देता है कि जब तुम पैगम्बर की बीवियों (हम सब की मांओं) से कोई सामान मांगने जाओ तो वह सामान पर्दे की आड़ से मांगा करो यह तुम्हारे और उन के दिलों के पाक रखने का बेहतरीन जरीआ है। (33:53)

मेरी माओ बहनो! हम मुसलमान हैं हमारे रब ने हमारी हिदायत व रहनुमाई और भलाई के लिये अपने प्यारे नबी के जरीअे जो कुर्आन भेजा और नबी सल्लल्लाहु अलौहि व सल्लम की तअलीमात से यही तअलीम मिलती है कि दुन्या व आखिरत में हमारी सलामती की जमानत पूरी शारीअत की पाबन्दी में है जिस में हमारा पर्दे में रहना बहुत अहम्मीयत रखता है।

सब से पहली बात तो यह कि ईमान के तकाज़े से हम पर्दे की पाबन्द हों इससे कोई दुन्यावी फाइदा हम को हासिल हो या न हो हम को तो आखिरत की दायमी जिन्दगी बनाना है, लेकिन यह अल्लाह का मज़ीद करम है कि हम बहनें अगर अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की लाई हुई शरीअत पर अमल करें तो आखिरत तो इनशाअल्लाह बन ही जाएगी दुन्या में भी सुकून मिलेगा। दुन्या में जो हम औरतों के जरीअे फसाद फैला हुआ है उस से सुकून मिल जाएगा। फिर न किसी लड़की के गले से कोई जंजीर खींच सके गा न किसी हसीन लड़की का चेहरा तेजाब से खराब किया जाएगा, न रकीबों में खून खराबा होगा, न भाई, बाप को नाजाइज खबर से शर्मिन्दा होना पड़ेगा। एक लड़की तभी अपने वालिदैन का सच्चा प्यार पाएगी, अपनी बहनों और भइयों को महबूब होगी, बड़ी होगी शादी होगी शौहर जान छिड़केगा, सास ससुर, नन्दों में मकाम पाएगी। साहिबे औलाद होगी मां की इज्जत से सरअफराज होगी जूं जूं उम्र बढ़ेगी इज्जत में भी इजाफा होता जाएगा।

लेकिन हमारी बहुत सी नादान बहनें अजनबी मर्दों के कन्धे से कन्धा मिलाने के चक्कर में अपनी आखिरत बर्बाद कर रही हैं बड़े दुख की बात है कि हमारे भुपाल में कितनी मुस्लिम

खवातीन हैं जो ब्यूटी पार्लर खोल कर गैर शरई बनाव सिंगार में खुद गुनहगार हो रही हैं और गुनाह में मदद भी कर रही हैं हमारी कितनी बहनें ब्यूटी की दूकान खोल कर फुजूल खर्ची को रवाज देने में मदद करती हैं, जबकि फुजूल खर्ची करने वाले को शैतान का भाई बताया गया है और कुर्आन में गुनाह पर मदद से रोका गया है। हमारी कितनी बहनें फरमाइश कर के टीवी मंगवा लेती हैं, बहाना यह होता है कि खबरें सुनी जाएंगी और बच्चे मारे मारे फिरने से बच जाएंगे हाय अफसोस मुआशरे को गन्दा करने में टीवी से बढ़ कर भी कोई जरीआ हो सकता है? पांच दस मिनट की झूटी सच्ची खबरों के साथ भाई , बहन बाप बेटी एक साथ जो जिंसी प्यार के मनाजिर देखते हैं उस का बच्चों बच्चियों और खुद अपनी आंखों का पानी मर जाता है, खुदा की पनाह यह जो अखबरों में बाप बेटी के वाकिआत छपते हैं यह टी.वी. और सनेमा और बेपर्दगी ही की देन हैं। मैं अपनी बहनों से आजिजाना दरखवास्त करती हूँ कि खुदा के लिए वह समझें और हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलौहि व सल्लम की शरीअत को अपना कर दुन्या व आखिरत की कामयाबी हासिल करें अल्लाह तआला से दुआ करती हूँ कि वह हम सब को तौफीक से नवाजे। आमीन।

❑❑

रौज़–ए–अनवर पर

आसी लखनवी

अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की पुर नूर क़ब्रे मुबारक की ज़ियारत के लिये हज़ारों ज़ाइरीन ने बयक वक्त धावा बोल दिया जब कि ज़ियारत की जगह बहुत तंग थी ऐसे में खुद्दाम किसी को ठहरने न देते थे, यह उनकी मजबूरी थी मैंने चाहा कि एक मिनट ठहर जाऊं मगर मेरा हाथ पकड़ कर आगे बढ़ा दिया गया और मैं सलाम अर्ज़ करता हुआ आगे बढ़ गया मगर दिल भर आया और यह अश्आर ज़बाँ पर आ गये।

नबी के दर पे आया हूँ, कोई मुझ को भगाए क्यों।
मैं खुद रोता हुआ आया, कोई मुझ को रुलाए क्यों।।

महब्बत मुझ को लाई है, हुकूमत तुम को लाई है।
हर इक आमिल अमल का यां, सिला अपना न पाए क्यों।।

मुझे मुशरिक न समझो तुम, मुवह्हिद हूं, मुवह्हिद हूं।
ग़लत फ़हमी में पड़ करके, कोई मुझ को सताए क्यों।।

सलाम उस पर कि जिस के दर, हमा वक्ती के पहरे हैं।
सलामी फिर मेरी यां से, फ़िरिश्ता ले न जाए क्यों।।

रुकावट जितनी डालोगे, तलब उतनी ही उभरेगी।
खड़े हो उन के दर पर जो तो रश्क तुम पर न आए क्यों।।

महब्बत उनकी ईमां है, मेरा दिल उनपे क़ुर्बां है।
महब्बत उनकी लाज़िम है, तो दिल उन पर न आए क्यों।।

महब्बत की अलामत तो, इताअत है इताअत है।
इताअत से जो मुंह मोड़े, महब्बत फिर जताए क्यों।।

दुरूद उन पर सलाम उन पर, हों ला तअदाद मेरे रब।
ये बन्दा जो कि आसी है, तेरे दर पर न आए क्यों।।

❑❑

समाज सुधार

– एम0 हसन अंसारी

'इस्लाह (सुधार) के बाद धरती पर फसाद मत पैदा करो। (कुरआन) आधुनिक समाज में नैतिक मूल्यों में गिरावट, मनमानी व बेउसूली जिन्दगी का दौर दौरा, माया मोह की बेतहाशा रेस बुद्धजीवी वर्ग की चिन्ता का विषय है। उस ने इस का नोटिस लिया है और अपने अपने तौर पर अनेक स्वयं सेवी संस्थाओं (एन जी ओ तथा रजाकार तनजीमों) ने अपने अपने प्लेटफार्म से इस दिशा में प्रयास किये हैं जो आज भी जारी है। किन्तु नैतिक मूल्यों में गिरावट का ग्राफ है कि गिरता ही जा रहा है, थमने का नाम ही नहीं लेता। सेंसेकस का गिराफ गिरता है तो मीडिया और अखबारों की सुर्खियाँ हफतों इसी का राग अलापती रहती है, यह एक ग्लोबल प्राबलम है। नैतिक मूल्यों में गिरावट भी एक ग्लोबल समस्या है। यह जमीनी सच्चाई है। समाज के लिये अधिक हानिकाराक नैतिक मूल्यों का पतन है यह बहुत सों का मानना है, पर हमारा हाल यह है कि:–

"जानते हैं सवाबे ताअ़त व जुहद, पर तबीअ़त इधर नहीं आती"

मनुष्य के आचरण में बदलाव अकल के साथ नकल करने से आता है, नकल मारने से नहीं। इस प्रक्रिया में निरीक्षण और आबजरवेशन (मुशाहिदा) का विशेष महत्व है। हमारे दैनिक जीवन में कुदरती तौर पर सुबह से शाम तक अनेक घटनायें घटती रहती हैं किन्तु इस घटना चक्र का वही अंश हमारे दिल व दिमाग पर गहरा नक़्श छोड़ता है जो हमारी अपनी अभिरूचि और मिजाज से मेल खाता है और इसलिये जिस का हम नोटिस लेते है। यही नोटिस लेना ही विचारों को जन्मदेता है और व्यक्तित्व के विकास में यही चिन्तन, जो कर्म की जननी की हैसियत रखता है, अहम रोल अदा करता है। कर्म के फल को हम अपना अभीष्ट मानते हैं। अभीवर की प्राप्ति हमारे अन्तः करण को सुख और सनतोष प्रदान करती हैं यह प्रक्रिया हर एक के जीवन में अनवरत चलती रहती है, किसी में कम किसी में अधिक जिस में अधिक है वह अधिक कामयाब है।

अच्छी सोच और सद्विचार व्यक्ति को अच्छा बनाते हैं। अच्छा या बुरा वह है जिस को समाज में मान्यता प्राप्त हों समय, स्थिति और काल तथा फल व नतीजा अच्छाई बुराई निर्धारित करते हैं। आग खाना पकाये जो पेट की आग बुझाये तो अच्छी और किसी का धर जलाये तो बुरी मनुष्य विवेकशील प्राणी है उसे मान्य और अमान्य हलाल और हराम में फर्क को समझने की शक्ति विधाता ने प्रदान की है समय समाज में अनुकूल परिस्थिति में मान्य बढ़ता है विकसित होता है, अमान्य घटता है सिमटता है। जहाँ मान्यतायें अधिक होंगी, वह समाज अधिक सभ्य व सुधरा समाज़ कहलाने का पात्र होगा।

समाज सुधार हमारी जीवन शैली, हमारे रहन सहन का अंग बने, किसी दबाव में नहीं किसी लालच में नहीं किसी बदल की उम्मीद में नहीं बल्कि आमद के रूप में स्वतः प्रेरित स्पन्टे नियस विचार के रूप में दैनिक आचरण के रूप में। जीने के लिये हर जानदार आक्सीजन के घुँट पीता रहता है, अनजाने तौर पर। आकसीजन को हम देखते नहीं माँगते नहीं, मिलना बन्द हो जाये या इस की मात्रा कम हो जाये तो दम घुटने लगता है और फिर इसे रगों में दौड़ने के लिये तदबीरें की जाती है फिर भी नाकामी की सूरत में प्राण पखेरू उड़ जाते है और जतन करने वाले हाथ मलते रह जाते है।

हम चलते हैं। पग पग आगे बढ़ते हैं। पगों की गिनती कौन करता है। जो गिनने के चक्कर में पड़ा रह गया, जो बिना गिने चलता गया, उसने मंजिल को पा लिया एक 'गुबारे कारवाँ गिनता रहा दूसरे न मँजिल को जा लिया।.....

शेष पृष्ठ 32 पर

कुरआन की पारिभाषिक शब्दावली

डॉ0 मुहम्मद अहमद

बैअ़त– वचन देना, आज्ञापालन की प्रतिज्ञा करना, वचनबद्ध होना आदि।

बनी इसमाईल– हज़रत इसमाईल (अलै.) की संतति के लोग। हज़रत इसमाईल (अलै.) हज़रत इबराहीम (अलै.) के बड़े पुत्र थे अल्लाह के आखिरी नबी हज़रत मुहम्मद (सल्ल.) का जन्म बनी इसमाईल ही की संतति में हुआ।

बनी इसराईल– इसराईल की संतति, यहूदी। इसराईल हज़रत याकूब (अलै.) का दूसरा नाम था। हज़रत याकूब (अलै.) के बेटे और हज़रत इबराहीम (अलै.) के पौत्र थे। यहूदी इन्हीं के वंश से हैं, इसीलिए उन्हें बनी इसराईल कहकर पुकारा गया है।

बैतुल मक़दिस– पवित्र घर, मस्जिदे अक़्सा। वह पाक घर जो यरूशलम में है, जिसके निर्माण का संकल्प हज़रत दाऊद (अलै.) ने किया था और यह काम उनके बेटे हज़रत सुलैमान (अलै.) के हाथों पूरा हुआ।

मजूस– मजूस से अभिप्रेत इरान के अग्निपूजक लोग हैं, जो प्रकाश और अंधकार को दो अलग–अलग खुदा मानते हैं और अपने को जरदुश्त का अनयायी कहते हैं।

मदयनवाले– अरब की एक पुरानी जाति। इस जाति की आबादी हिजाज से फिलिस्तीन के दक्षिण तक और वहाँ से प्रायद्वीप सीना के अंतिम छोर तक। लाल सागर और अक़बा की खाड़ी तक फैली थी इसका केन्द्र मदयन नगर था। मदयनवाले हज़रत इबराहीम (अलै.) के बेटे मिदयान की नस्ल से बताए जाते हैं। इस कौम के मार्गदर्शन के लिए अल्लाह ने हज़रत शुऐब (अलै0) को नबी बनाकर भेजा। इस कौम में शिर्क ही नहीं बल्कि इसके अतिरिक्त और भी बहुत–सी बुराइयाँ पैदा हो गई थीं जब इस कौम ने अपने नबी की बात न मानी और अपनी सरकशी से बाज न आए तो अल्लाह ने अपना अज़ाब उतारकर इस कौम को विनष्ट कर दिया केवल इसके खण्डहर ही शिक्षा के लिए शेष रह गए हैं।

मन्न– मन्न प्राकृतिक खाद्य पदार्थ है जो इसराईलियों को बेघरबार होने की दशा में 40 वर्षों तक मिलता रहा। मन्न को वे मीठे और स्वादिष्ट मधु के रूप में प्रयोग में लाते थे। मन्न के अतिरिक्त उन्हें सलवा भी प्राप्त था। सलवा बटेर के प्रकार की एक पक्षी थी जिनको वे खाते थे।

मस्जिदे हराम– प्रतिष्ठित मस्जिद। वह मस्जिद जिसके बीच काबा स्थित है।

महर– वह रक़म या माल जो विवाह के नाते से पति अपनी पत्नी को देता है। कुरआन में इसके लिए 'सदक़ात' शब्द प्रयुक्त हुआ है जो 'सदक़ा' का बहुवचन है। सदक़ा की व्युतपत्ति 'सिदक़' से हुई है। सच्चाई, मित्रता, दुरूसती आदि इसके कई अर्थ होते हैं। महर वास्तव में स्त्री–पुरुष के सम्बन्धों और उनके प्रेम–भाव के बने रहने का एक प्रतीक या चिह्न है।

मीकाईल– एक प्रसिद्ध फ़रिश्ते का नाम।

मुनाफ़िक़ (Hypocrite)– कपटाचारी, कपटी, छली, निफाक़ रखने वाला। ऐसा व्यकित जो अपने को मुसलमान कहता हो किन्तु इस्लाम से उसका सच्चा सम्बन्ध न हो। मुनाफ़िक़ कई प्रकार के हो सकते हैं–

(1) वे लोग जो इसलिए मुसलमानों में घुस आए हों और अपने को मुसलमान कहते हों, ताकि वे इस्लाम को अधिक से अधिक हानि पहुँचाने में समर्थ हो सकें।

(2) जो वास्तव में मुसलमान तो न हों किन्तु भौतिक और सांसारिक लाभों को प्राप्त करने के ध्येय से मुसलमानों में शमिल हों। किन्तु इस्लाम को हानि पहुँचाने का कोई इरादा न रखते हों।

(3) वे लोग जो शामिल तो हों मुसलमानों ही के गिरोह में किन्तु ईमान उनका बहुत ही कमज़ोर हो।

जब कभी भी आज़माइश पेश आए तो वे कमज़ोरी दिखा जाएँ।

मुशरिक– अनेकेश्वरवादी, बहुदेववादी, शिर्क करनेवला, किसी अन्य को अल्लाह के समकक्ष घोषित करनेवाला।

मुशरिक वह व्यक्ति है जो अल्लाह के अस्तित्व या उसके गुणों या उसके हक़ में दूसरों को साझीदार बनाए अस्तित्व में साझीदार ठहराने का यह अर्थ है कि 'किसी से उसको या उससे किसी को 'उत्पन्न' होने की धारणा रखी जाए। जैसे किसी को उसका बाप या उसकी संतान समझी जाए।

गुणों में दूसरों को अल्लाह का साझीदार ठहराने का अर्थ यह होता है कि खुदा के विशेष गुणों का सम्बन्ध दूसरों से भी जोड़ा जाए। उदाहरणार्थ–कोई यह समझने लगे कि जगत की रचना में किसी अन्य देवी–देवता का भी हाथ है या कोई यह मानने लगे कि कुछ और हस्तियाँ भी हैं जो स्वतंत्र अधिकार रखती हैं कि जो चाहें करें, जिसका चाहें काम बना दें और जिसका चाहें बिगाड़ दें।

हक़ और अधिकार में अल्लाह का शरीक ठहराने का अर्थ यह है कि जो हक़ और अधिकार अल्लाह का होता है उसमें वह दूसरों को भी साझीदार समझने लगे। जैसे– जगत का स्वामी और स्रष्टा अल्लाह है तो उपासना भी उसी की होनी चाहिए। अब यदि कोई अल्लाह से हटकर किसी दूसरे की बन्दगी और पूजा करता है तो यह अल्लाह के हक में दूसरे को शरीक ठहराना होगा। और ऐसा करनेवाले को मुशरिक कहा जाएगा।

मुसलमान– इस्लाम का अनुयायी, अल्लाह की आज्ञा का पालन करनेवाला। अल्लाह के अंतिम नबी हज़रत मुहम्मद (सल्ल.) के दिखाए मार्ग पर चलनेवाला।

मुस्लिम– आज्ञाकारी, इस्लाम का अनुयायी, अकेले अल्लाह को अपना रब, स्वामी, शासक और आराध्य सब कुछ माननेवाला और अपने आपको असके समक्ष समर्पण कर देनेवाला। उसी के आदेशानुसार जीवन–यापन करनेवाला। संसार की सारी ही चीज़ें–सूर्य, चन्द्रमा, नक्षत्र, हवाएँ आदि सब–वास्तव में मुस्लिम हैं क्योंकि ये सभी अल्लाह की आज्ञा के पालन में लगी हुई हैं।

मुहाजिर– हिजरत करनेवाला, अल्लाह के लिए अपना घरबार छोड़ने वाला नबी (सल्ल.) के वे साथी जो अल्लाह के लिए अपना वतन–मक्का–छोड़कर मदीना प्रस्थान कर गए थे।

मोमिन– ईमानवाला वह व्यक्ति जो अल्लाह, उसके पैग़म्बरों और उन सच्चाइयों पर पूर्ण विश्वास रखता हो और उन्हें दिल से मानता हो जिनकी शिक्षा पैग़म्बरों ने दी है।

(देखिए–'ईमान'।)

यहूद– यहूदी लोग। देखिए 'यहूदी'।

यतीम– अनाथ ,वह बच्चा जिसका बाप मर चुका हो।

यहूदी– वे लोग जो अपना सम्बन्ध हज़रत मूसा (अलै.) से जोड़ते हैं। एक विशेष क़बीले से यहूदी मत का आविर्भाव हुआ, उस क़बीले का नाम 'यहूदाह' था। यहूदाह शब्द की व्युतपत्ति 'हूद' से हुई हैं हूद का अर्थ होता है लौटना, पलटना, तौबा करना। यहूदियों को चाहिए कि वे अपने नाम की लाज रखें और अपने रब की ओर पलट आएँ।

रब– मौलिक अर्थ है पालनकर्ता फिर स्वाभाविक रूप से इसमें कई अर्थ का आविर्भाव हुआ। कुरआन में 'रब' शब्द तीन अर्थों में प्रयुक्त हुआ है जिनमें परसपर गहरा संपर्क पाया जाता है:

(1) पालनकर्ता, संरक्षक (2) स्वामी, मालिक, प्रभु। (3) शासक, हाकिम, विधाता, प्रबन्धकर्ता।

रब्बानी– धर्माधिकारी, यहूद के यहाँ जो धर्मज्ञाता, धार्मिक पदों पर नियुकत होते थे और धर्मिक विषयों में मार्गदर्शन करना अनका कर्तव्य होता था, इसके अतिरिक्त उपासना की व्यवसथा की निगरानी भी उनके ज़िम्मे होती थी, ऐसे लोगों को रब्बानी कहा जाता था। इसका संकेत कुरआन में भी किया गया हैं।

(देखिय कुरआन,5:63)

रसूल–पैग़म्बर, दूत, वह व्यक्ति जो रिसालत के पद पर नियुक्त हो। ऐसा व्यक्ति जिसके द्वारा अल्लाह लोगों को अपना मार्ग दिखाता और उन तक अपना संदेश पहुँचाता है उसे रसूल या नबी कहते हैं।

रसूल और नबी में थोड़ा अंतर

पाया जाता है। रसूल वह पैग़म्बर होता है जिसे अल्लाह की ओर से नई शरीअत (धर्मविधान) और किताब प्रदान हुई हो नबी हर एक पैग़म्बर को कहते हैं, चाहे उसे नई शरीअत और किताब मिली हो या उसे केवल पूर्वकालिक किताब और शरीअत पर लोगों को चलाने का कार्यभार सौंपा गया हो। खुदा के पैग़म्बर या नबी संसार के विभिन्न भागों में आए हैं, उनकी एक बड़ी संख्या है, जिनमें से हम कुछ ही नबियों के नाम से परिचित हैं। नबियों की मौलिक शिक्षाएँ एक रहीं हैं मुस्लिम के लिए अनिवार्य किया गया है कि वह सभी नबियों पर ईमान लाए और उनके प्रति उपने हृदय में श्रद्धा और प्रेम बनाए रखे। भले ही उन नबियों में से किसी या किन्हीं के समुदाय के लोग उसके शत्रु ही कयों न हों, और शत्रुता में वे कितने ही आगे क्यों न बढ़े हुए हों। जैसे–मुसलमान के लिए अनिवार्य है कि वह हज़रत मूसा (अलै.) को पैग़म्बर स्वीकार करे और उनके प्रति आदर भाव रखें, हालाँकि हज़रत मूसा(अलै.) को माननेवाले यहूदियों की इस्लाम और मुसलमानों से शत्रुता कोई छिपी हुई चीज़ नहीं है।

रस्सवाले– दे खें 'अर–रसवाले'।

रहमान– अतयन्त कृपाशील ईश्वर, वह सत्ता जिसकी दयालुता फीकी और धीमी न हो, अल्लाह का एक विशेष नाम।

रिब्बी (Devoted Man)– अल्लाहवाले, ईशभक्त।

रिसालत– रसूल होने का भाव, पैग़म्बरी, ईशदूतत्व (देखिए 'रसूल'।

रूकू(रूकूअ़)– सिर झुकाना, नमाज़ का एक अंग जिसमें व्यक्ति अल्लाह की बड़ाई का ध्यान करते हुए उसके आगे नतमस्तक होता है।

रूहुल कुदुस– पवित्रात्मा। इससे अभिप्रेत वह्य का ज्ञान भी है जो हज़रत ईसा (अलैहिस्सलाम) को दिया गया था।' इससे अभिप्रेत फ़रिश्ता हज़रत जिबरील (अलै.) भी हैं जो अल्लाह की वाणी पैग़म्बर तक पहुँचाते थे और इससे अभिप्रेत हज़रत ईसा (अलै.) की अपनी पवित्रता भी होती है।

रोज़ा– व्रत। कुरआन में इसके लिए 'सियाम' आया हैं सियाम का मौलिक अर्थ है रूक जाना। रोज़े में आदमी सुबह पौ फटने से लेकर सूर्यास्त तक खाने–पीने और काम वासना की पूर्ति से रुका रहता है। आत्मा की शुद्धता और आत्मिक विकास के लिए रोज़ा रखना जरूरी है। रोज़े से आदमी में संयम की वृत्ति पैदा होती है और वह ईशपरायण बन जाता है। अर्थात वह अल्लाह का डर रखनेवाला और उसकी अवज्ञा से बचनेवाला व्यक्ति बन जाता है और उसके मन में यह भाव जागृत हो जाता है कि जीवन में खाने–पीने और भौतिक पदार्थों के भोग के सिवा भी कुछ है, जिसे प्राप्त किए बिना मनुष्य पाशविक स्तर से ऊपर नहीं उठ सकता।

लूत(अलै.) की जातिवाले– हज़रत लूत (अलै.) अल्लाह के एक पैग़म्बर थे। उनकी क़ौम अर्थात उनकी जातिवाले। यह जाति उस भू–भाग में बसती थी जो शर्के उर्दुन (Trans Jordan) कहलाता है। यह भू–भाग फ़िलिस्तीन और ईराक़ के मध्य में पड़ता है। बाइबिल में कहा गया है कि इनकी राजधानी 'सदूम' थी। तलमूद से ज्ञात होता है कि इसके चार और बड़े–बड़े नगर थे, जहाँ बाग ही बाग़ दिखाई देते थे और जहाँ सौंदर्य का राज्य था। किन्तु आज उस जाति का नाम व निशान सब मिटकर रह गया बस एक मृत–सागर (Dead Sea) रह गया है जिसे 'लूत सागर' कहा जाता है।

लूत की जातिवाले बड़े निर्लज्ज और चरित्रहीन थे। इनके यहाँ बहुत सी बुराइयां पनपी हुई थीं लेकिन सबसे बड़ी बुराई उनके यहाँ पैदा हो गई थी कि वे स्त्रियों की अपेक्षा अपनी काम–तृष्णा की तृप्ति पुरुषों से करते थे और इसे वे कोई बुराई नहीं समझते थे। हज़रत लूत (अलै0) ने अपनी क़ौम को सीधे मार्ग पर लाने की पूरी कोशिश की किन्तु क़ौम का दुर्भाग्य था कि उसने सुनी–अनसुनी कर दी। अंततः अल्लाह ने इनकी बस्ती को तलपट करके रख दिया।

लौंडी– इससे अभिप्रेत वे स्त्रियाँ हैं जो इस्लामी युद्ध में गिरफ़्तार हुई हों। इन स्त्रियों के सम्बंध में इस्लामी क़ानून यह है कि पहले उन्हें हुकूमत के हवाले किया जाएगा, फिर हुकूमत को यह अधिकार

है कि वह उन्हें रिहा कर दे या रिहाई के बदले में कुछ फ़िदया ले। या वह उन मुसलमान क़ैदियों की रिहाई के बदले में उन्हें छोड़ दे जो दुशमन के क़ब्ज़ें में हों। या फिर उन स्त्रियों को सैनिकों में बाँट दे।

हुकूमत की ओर से विधिपूर्वक स्त्री को किसी व्यक्ति की मिलकियत में दिया जाना ठीक उसी तरह धर्मसंगत बात है जैसे विवाह एक धर्मसंगत कार्य है। लौंडी से जो औलाद पैदा होगी वह जायज़ औलाद मानी जाएगी और उस औलाद को वही हक़ प्राप्त होगा जो अपनी पत्नी से उत्पन्न औलाद को प्राप्त है। बच्चा पैदा होने के बाद लौंडी को बेचा नहीं जा सकता। अपने स्वामी के मरने के बाद वह स्वतंत्र हो जाएगी। इस्लाम में इसे अच्छा माना गया है कि लौंडियों को स्वतंत्र करके उनसे विवाह कर लिया जाए या उनका विवाह उन ग़रीब व्यक्तियों से कर दिया जाए जो निर्धनता के कारण बड़े घरानों में विवाह नहीं कर पाते। लड़ाई में गिरफ़्तार स्त्रियाँ समाज के लिए एक समस्या होती हैं इस्लाम ने इसका जो समाधान निकाला है वह स्वाभाविक एवं मर्यादानुकूल है।

वुज़ू– नमाज़ पढने से पहले शुद्धता के लिए हाथ, मुँह और पैरों को धोना और सिर पर गीला हाथ फेरना।

वह्य (Revelation)– प्रकाशना, दैवी प्रकाशन, ईश्वरीय संकेत। वह्य का शाब्दिक अर्थ होता है तीव्र संकेत, गुप्त संकेत। अर्थात ऐसा इशारा जो तेज़ी से इस प्रकार किया जाए जिसे वही जान सके जिसको इशारा किया गया हो परिभाषा में इससे अभिप्रेत वह विशेष वह्य हैं जिसके द्वारा अल्लाह अपने नबियों को अपनी इच्छा और आदेशों से अवगत कराता है। कुरआन और दूसरे ईश्वरीय धर्मग्रंथो का अवतरण वह्य द्वारा ही हुआ है।

शहीद– साक्षी, गवाह, हाज़िर, वीरगति को प्राप्त। इस शब्द के कई अर्थ होते हैं।

(1) जो व्यक्ति किसी जाति की ओर से जाति के प्रतिनिधि के रूप में किसी मामले की गवाही दे।

(कुरआन,28:75)

(2) बादशाह के यहाँ जिसकी हैसियत सामान्य जनता के प्रतिनिधि या सिफ़ारिशी की हो।

(3) जिस चीज़ की गवाही दी जा रही हो अर्थात जिसकी सूचना लोगों को दी जा रही हो उस चीज़ और लोगों के बीच जो व्यक्ति वास्ता या माध्यम बन रहा हो।

(कुरआन,2:143)

(4) जो व्यक्ति किसी बड़े मामले की गवाही सप्रमाण दे। जो अपने संपूर्ण जीवन और चरित्र से इस बात की गवाही दे कि वह जीवन के जिन तथ्यों और मूल्यों पर विश्वास रखता हो वे सत्य हैं।

अल्लाह के मार्ग में प्राण देनेवाले या मारे जानवाले को इसी लिए शहीद कहा जाता है कि वह अपने प्राण देकर इस बात की गवाही देता है जिस चीज़ पर ईमान लाने का उसे दावा था, वास्तव में दिल से उसे वह सत्य मानता था।

(5) वह व्यक्ति जो किसी चीज़ को पूरी तरह जानता हो और इस सिलसिले में वही गवाह और सनद (प्रमाण) हो।

(कुरआन29:52)

शिर्क– अनेकेश्वरवाद। किसी को अल्लाह का शरीक या साझीदार ठहराना, अल्लाह की सत्ता, उसके गुणों और उसके अधिकारों में किसी को शरीक समझना।

(देखिए 'मुशरिक'।)

शैतान– शाब्दिक अर्थ है जलदबाज़, अग्नि–स्वभाववाला, अशान्त। तत्पश्चात इसमें सरकशी और क्रूरता के अर्थ का भी समावेश हो गया शैतान के ये दुर्गुण किसी जिन्न में भी पाए जा सकते हैं और किसी मनुष्य में भी। कुरआन में इस शब्द का प्रयोग मनुष्य और जिन्न दोनों के लिए हुआ है।

सजदा– झुकना, साष्टांग प्रणाम, दण्डवत, सिर ज़मीन पर रख देना, चेहरे के बल बिछ जाना, नमाज़ का एक विशेष अंग।

सदक़ा– दान, खैरात, अल्लाह के मार्ग में खर्च करना। कुरआन् में ज़कात और खैरात दोनों ही के लिए यह शब्द प्रयुक्त हुआ है। सदक़ा की व्युत्पत्ति 'सिद्क' से हुई है जिसका अर्थ होता है सच्चाई और निष्ठा।

❑❑

हमें कहना है कुछ अपनी ज़ुबाँ से

(लेख की सुचनाओं के उत्तर दायी लेखक हैं - सम्पादक)

- अजीजुल हसन सिद्दीकी

"समकालीन सोच" के 44 वे अंक में (जून–दिसम्बर 08) हसन सुरूर साहब का एक लेख प्रकाशित हुआ है जिसमें उन्होंने "इसलामी उपद्रव और इसलामी आतंकवाद"के शब्दों को बार बार दोहराया है जिससे यह आभास होता है कि लेखक यह समझते हैं कि इसलाम में आतंकवाद की बाकायदा तालीम दी गई है और इसलामी सहित्य तथा इस्लामी इतिहास आतंकवादी घटनाओं से भरे हुये हैं। लेख में अनेकों हवालो से यह साबित करने की कोशिश की गई है कि मुसलामान कुछ भी कहें वे शुरू से अंत तक और ऊपर से नीचे तक आतंकवादी हैं।

लेख का दूसरा पैराग्राफ यूं शुरू होता है:– "मोटे तौर पर मुसलमानों की दलील यह है कि इस (मुसलमानों की छवि खराब किये जाने की कोशिश) के लिये बहुत सारे कारण जिम्मेदार हैं इस सूची में सबसे ऊपर पश्चिमी विदेश नीति है। विशेष रूप से फिलिस्तीन की समस्या पर जिसके साथ अब इराक का मुद्दा भी जुड़गया है।"

इसी पैराग्राफ में लेखक ने मुसलमानों की गरीबी, बेरोजगारी और शिक्षा के अभाव की भी चर्चा की है। हम लेखक महोदय के शुक्रगुजार हैं कि उन्हें इन बातों का भी ध्यान आया काश कि वे जानते कि भारत में मुसलामानों की गरीबी और बेरोजगारी में सरकारी नीतियों और फैसलों का बहुत बड़ा हिस्सा है। हसन साहब को नहीं पता कि देश की आजादी के बाद गृह मंत्रालय ने एक गुप्त सर्कुलर द्वारा मुसलमानों की भरती पर रोक लगा दी थीं कौन नहीं जानता कि आज देश में अनगिनत योग्य मुस्लिम नौजवान ऐसे हैं जिन्हें केन्द्रीय तथा प्रान्तीय सरकरों ने सैनिक बलों में ही नहीं बल्कि बहुत सारी सरकारी नौकरियों से दूर कर रखा है हसन साहब नोट करें, आजादी के समय सामान्य सरकारी नौकरियों में मुसलमान 30–35 प्रतिशत से कम न थे और पुलिस में उनका अनुपात 60 प्रतिशत था लेकिन कांग्रेस के शासन काल में उनका अनुपात 2 प्रतिशत हो गया।

हसन साहब हमें क्षमा करें, हम उन्हें बताना चाहते है कि जब किसी घर में हक़दार को हक़ नही मिलता तो वह मायूस ही नहीं उत्तेजित भी होता है और अपने ही भाई से लड़ पड़ता है। यह इंसानी फितरत का तकाजा है लेकिन हम हिन्दुस्तानी मुसलमाानों की बात करना चाहते है उन्हों ने अपने प्यारे वतन में सारी नाइंसफ़ियों और अधिकार हनन के बावजूद वतन से मुहब्बत का रिशता नहीं तोड़ा और कभी ब्रिगेडियर उसमान बनकर तो कभी हवलदार अब्दुल हमीद बनकर देश की रक्षा करते हुये अपने प्राण न्योछावर किये। गत 62 वर्षे में शयद 2 नाम मुसलमानों के गलत या सही मिल जायें लेकिन दर्जनों नाम गिनवाये जा सकते है उन गैर मुस्लिमों के जिन्हों ने देश की सुरक्षा तथा सेना की गलत सूचनायें दूसरे देशों तक पहुंचाया। हम यह भी जानते है कि किसी व्यक्ति के शराबी या फसादी होने की वजह से उसके पूरे समाज को फसादी या शराबी नहीं ठहराया जा सकता, किसी खान्दान के एक व्यक्ति की सजा उसके पूरे परिवार को नहीं दी जा सकती। मान लें किसी मुसलमान ने अगर देश से गद्दारी की तो उसे फांसी दे दो मगर यह क्या है कि सारे मुसलमानों को और उनके धर्म को कोसने बैठ गये।

500 वर्ष पुरानी मस्जिद गिराने वाले क्या आतंकवादी नहीं थे? और क्या संघी आतंकवाद ने यह कारनामा अंजाम नहीं दिया? फिर उनको क्यों नहीं आतंकवादी कहा गया? जी हां। उन्हें कारसेवक की उपाधि दी गई और सरकारी संरक्षण में पूरी सुरक्षा के साथ उनके घरों तक पहुंचाया गया उनपर टाडा के तहत मुकदमा भी नहीं कायम हुआ। बाबरी मस्जिद की शहादत के बाद 6 दिसम्बर 1992 को मुम्बई में अचानक

साम्प्रदायिक दंगा हुआ जो दो महीने चलता रहा इसमें मुसलमानों का नरसंहार हुआ मगर इसको आतंकवाद से नहीं जोड़ा गया जबकि इसमें एक हजार से अधिक लोग मारे गये थे और पांच हजार करोड़ की जायदाद व सम्पत्ति तबाह हुई थी इसके विपरीत इस दंगे की प्रतिक्रिया के तौर पर जब 12 मार्च 1992 को मुम्बई में जो सीरियल बम धमाके हुये जिनमें 250 लोग मारे गये और 250 करोड़ की जायदाद तबाह हुई तो उन्हें आतंकवादी क़रार दियार गया। उस समय देश में आतंक निरोधक कानून टाडा लागू था मगर देखना यह है कि एक हजार से अधिक इंसानों को मौत के घाट उतारने वालो पर तो यह टाडा नहीं लगाया गया पर दो सौ पचास लोगों के कत्ल के आरोपियों पर कठोरतम धारायें लगाकर जेलों में ठूंस दिया गया। इस प्रकार की नाइंसाफी और भेदभाव जिन लोगों के साथ होगा वे मायूसी और निराशा के शिकार होंगे ही कोई व्यक्ति मायूस और निराश होकर विलाप करना चाहे तो आप उसे इसकी अनुमति भी नहीं देना चाहते। शयर ने बहुत सही कहा है कि:–

फरयाद की कोइ लै नहीं है।
नाला पाबन्दे नै नहीं है।।

यहां यह बात भी नोट कर ली जाय कि जिस अंग्रेज ने सदियों तक हमारे देश में नफरत फैलाया और हिन्दू व मुसलमानों को लड़ाया उसी के देश ब्रिटेन के राजदूत ने बाबरी मस्जिद ढाये जाने से दो माह पुर्व अयोध्या का दौरा किया था और उसी समय अमेरिकी राजनायिकों ने भी वहां का गुप्त दौरा किया था यह प्रकरण प्रधानमंत्री कार्यालय तक पहुंचा जिसपर आई.बी. और रा द्वारा जांच का निर्णय लिया गया मगर एन.डी.ए. सरकार ने इसे ठंडे बस्ते में डाल दिया।

दुख का विषय है कि हमारे देश में साम्प्रदायिक दंगों को "धर्म रक्षा"और राष्ट्र रक्षा" का दर्जा दिया जाता है और दंगों की योजना बनाने वालों को एक बार नहीं कई बार राजगद्दी पेश की जाती है मगर मुसलमानों को आतंकवादी ठहराया जाता है। यहां महाराष्ट्र से दूसरे राज्य के रहने वालों को बाहर निकालना चाहती है। यही मांसिकता है जो आज देश को तोड़ने पर तुली हुई है।

हसन साहब ने पश्चिमी देशें और बाहरी ताक़तो तथा इराक की चर्चा करके प्रकरण को साफ और आसान करदिया है। जी हां ब्रिटेन एक पश्चिमी ही देश था जिसने हमें दो सौ साल तक गुलाम बनाये रखा और जब तक यहां रहा "DEVIDE AND RULE" की नीति पर चलता रहा और जब गया तो चर्चिल के शब्दों में "धूल उड़ाकर गया"। अमेरिका और अन्य पश्चिमी देशों ने ही दूसरे देशों से यूहदियों को लाकर फिलिस्तीन में बसाया और अरबों को लूटा। यही शक्तियां अफ़ग़ानिस्तान और इराक को बरबाद करने के बाद ईरान पर हल्ला बोलने के लिये पर तौल रही हैं।

पश्चिमी देशों के बारे में हमारी जानकारी यह है कि वहां जितनी लड़ाइयां हुईं उसकी मिसाल दुनिया के इतिहास में नहीं मिलती, इन लड़ाइयों में लगभग ढाई करोड़ लोग मारे गये मगर आज जर्मनी और फ्रांस समेत तमाम योरोपीय देश आपस में घी शकर हों गये हैं, न कोई बार्डर है न वीज़ा है, न अलग करंसी है मगर ये सभी मिलकर हमें आपस में लड़ाकर बरबाद कर देना चाहते हैं एक कौम को दूसरी कौम से, एक धर्म के मानने वालों को दूसरे घर्म के मानने वालों से टकरा देना चाहते हैं अगर ऐसा नहीं था तो ब्रिटिश व अमेरिकी राजनायिकों को अयोध्या आने की क्या ज़रूरत थी और क्यों हमारी केन्द्रीय तथा राज्य सरकारों ने उन्हें वहां जाने दिया? ये प्रश्न बहुत महत्वपुर्ण हैं मगर हम संक्षिप्त बात करना चाहते हैं।

भारत में फ़सिस्ट ताकतों को केवल एक पश्चिमी देश ब्रिटेन से लाखों पाउंड सालाना की सहायता मिलती है। 12 दिसम्बर 2002 को ब्रिटेन के एक टी.वी. चैनल पर एक दस्तावेजी फिल्म दिखाई गई जिसमें दर्शाया गया था कि किस तरह संघ परिवार विदेशों में शिक्षा और कल्याण योजनाओं के नाम पर घन एकत्र करता है और भारत में अपने फ़ासिस्ट एजेन्डे को क्रियान्वित करता है।

भारत के लिये सबसे बड़ा ख़तराः–

1957 में चुनाव के बाद जब केरल में कमयुनिस्ट पार्टी ने ई. एस. नम्बूदरी पद के नेत्रित्व में पहिली बार अपनी सरकार बनाली तो पंडित नेहरू के सामने उस समय के बड़े बड़े राजनीतिज्ञों और अफ़सरों ने बहुत दुख व्यक्त किया था। एक वरिष्ठ आई. सी. एस. अधिकारी बाई. डी. कुडंया ने कहा था कि "महोदय, केरल में आखिर कम्युनिस्टों ने अपनी सरकार बना ही ली, अब अगर वे अगले चुनाव में केन्द्र में पहुंच जाय और दिल्ली का शसन सभाल ले तो कया होगा?

नेहरू जी कुछ देर तक सोचते रहे, फिर बोले "भरत को खतरा है तो हिन्दू साम्प्रदायिकता से है"। सरकार की वर्तमान परमाणु डील पर भी जरा ध्यान दें लें और पंडित नेहरू की सोच और विचार को भी सामने रखें। यह फैसला क्या संघ परिवार और पूर्व एन. डी. ए. सरकार के इरादों और फैसलों से मेल नही खाता?

दूसरा बड़ा खतराः–

हमारे देश में दूसरा बड़ा ख़तरा इसराइल और मोसाद का है जिसके बादल हमारे देश के आकाश पर छाते जा रहे है मगर इसके खिलाफ़ कोई तर्क या सबूत सुनने के लिये हमारी राष्ट्रीय सरकारी तन्त्र तैयार नहीं है। एक खबर यह भी सुनते चलिये, पिछले वर्ष खजराहो के एक मंदिर की दीवार पर रात के सन्नाटे में पुलिस ने एक इसराइली नवयुवक को चढ़ते हुये दबोच लिया था लेकिन यह समाचार कम ही लोगों की नज़रों से गुज़रा होगा क्योंकि इसको समझने के लिये कोई तैयार नहीं है। एक विदेशी इसराइली वहां क्या करने गया था? अगर मंदिर में पूजा करने गया था तो उसे दिन के प्रकाश में मंदिर के दरवाज़े से जाना चाहिये था न कि दीवार से फलांग कर। भारत उन देशों में शामिल है जो आतंकवाद से भयभीत हैं और इसराइल का सहयोग हासिल करने में लगे हुये हैं।

जहां तक 9/11 का सवाल है तो उसके बारे में पर्याप्त से अधिक प्रमांण आचुके हैं कि यह अमेरिकी इसराइली षणयन्त्र का एक "शाहकार" था।इस विषय पर अनेकों किताबें, शोध रिपोर्ट और दस्तावेजी फिल्में आचुकी हैं जो उसको धोका धड़ी, जालसाजी और अमेरिकी सरकार की साजिश करार दे चुकी हैं भारत में बिल क्लिंटन के दौरे के समय कशमीर में सिखों के सामुहिक नरसंहार पर स्वंय क्लिंटन का बयान हक़ीकत पर से पर्दा उठा चुका है मगर उस नरसंहार के कथित ज़िम्मेदार पाकिस्तान तथाकथित आतंकवाद की हक़ीक़त स्वयम हमारी न्यायपालिका ने साबित करदी कि सेना द्वारा मारे गये पाकिस्तानी आतंवादी नहीं बल्कि स्थानीय मज़दूर थे जिनके डी. एन. ए. टेस्ट ने सारा भांडा फोड़ दिया। और वर्तमान में उत्तर प्रदेश की घटनाओं में मास्टर माइंड बताये गये आफ्ताब आलम अंसारी की बेगुनाही को भी सामने रखना ज़रूरी है जिसे स्वयं एस. टी. एफ ने क्लीन चिट दी थी। इस संदर्भ में बनारस के मौलाना अब्दुलमतीन मदनी प्रवक्ता जमिया सलफ़िया के और अगस्त 2008 के राजीव नगर (कानपुर) के केस को भी सामने रखने की जरूरत है। बनारस के मौलाना अब्दुल मतीन को जयपुर पुलिस बनारस से ले जारही थी कि जनता के दबाव पर कानपुर से उनको बनारस वापस लाना पड़ा और उन्हें बे दाग रिहा किया गया क्योंकि उनके ख़िलाफ कोई केस साबित ही नहीं हुआ। इसी तरह कानपुर में हुये धमाके में मारे गये बजरंग दल के कार्यकर्ता सरदार भूपेन्द्र सिंह के घर के पास एक नहर से विस्फोटक सामग्री और देसी ग्रेनेड बरामद हुये और साथ ही फीरोजाबाद का नक्शा भी जिसमें रेलवे स्टेशन और तहसील को रेखांकित पाया गया। यह आतंकी मामलों में एक खुला हुआ नया मोड़ है जिसकी तह तक कानून और समाज को पहुंचना बहुत जरूरी है। ऐसी घटनायें अगर मुसलमानों को बदनाम करती हैं तो दूसरी तरफ ये देश के भीतर कानून और अमन व अमान के लिये एक बड़ी चुनौती भी है। इससे हिन्दुओं और मुसलमानों के बीच दूरी और गलतफहमी भी पैदा होती है। ये उदाहरण अब सांमान्य होते जा रहे है और साबित करते है कि दुनिया भर के इसलाम

विरोधी चरमपंथी ईसाई, यहुदी और हमारे देश के चरमपंथी फ़ासिस्ट संगठन मिलकर साज़िश के ताने बाने बुन रहे हैं इसलाम और मुसलमानों को बदनाम करने पर तुले हुये है। गत वर्ष ही इसराईल के यहूदियों और भारत के कुछ धार्मिक संगठनों के बीच एक समझौता हो चुका है।

वास्तविकता यह है कि इन्हीं आतंकी गतिविधियों को छिपाने के लिये ही विदेशी ताक़तो ने इसलाम को निशाना बना रखा है जिसके पीछे बुश सीनियर के सुरक्षा सलाहकार सेमुअल हेस्टिंगटन का दिमाग़ काम कर रहा है जिन्हों ने अपनी पुस्तक "सभ्यता का टकराव" में पहिली बार इसलामी आतंकवाद का नाम लिया था।

हसन साहब को मालूम होना चाहिये कि पश्चिमी देश ही हैं जो इसलाम दुशमनी की आड़ में इस आग को भड़काकर दुनिया भर में हथियारों की दौड़ को तेज करना चाहते है। उन्हें यह भी पता होना चाहिये कि हमारे देश में भी इससे बहुत कुछ मिलता जुलता चलता रहता है। कांग्रेस के एक वरिष्ठ नेता और मध्य प्रदेश के मुख्यमंत्री ने रामपुर की घटना के बाद कहा था कि "जब मैं मध्य प्रदेश का मुख्यमंत्री था तो वी. एच. पी. के लोगों को नाजायज बम बनाते हुये पकड़ा गया था।"

इससे भी बड़ा और पक्का सबूत चालबाजी व मक्कारी का तमिलनाडू से मिला है जहां के त्रिनेवेली जिले के 'तनकासी में आर. एस. एस. के कार्यलय और स्थानीय बस अड्डे पर गत 24 जनवरी को धमाका हुआ मीडिया ने इसपर लम्बी चौड़ी कहानियां बनाईं मगर पुलिस ने किसी दबाव में न आकर जांच की तो संघ परिवार के 42 वर्षीय पांडयान, 28 वर्षीय एस. कुमार और वी. नारायण को हिरासत में ले लिया। पुलिस ने बताया कि शर्मा गत वर्ष जूलाई से अबतक ऐसे 14 बम बना चुका है।

नान्डीज़ में बम बनाने के जो कारखाने पकड़े गये और नकली दाढ़ियां व टोपियां पाई गई वह किसी मुसलमान के घर से नहीं निकली थी मगर इन सब मामलों पर पर्दा डाल दिया गया। अगस्त 2008 में अहमदाबाद में हुये बम धमाकों में संदिग्ध अमेरिकी केन हेवर्ड के खिलाफ तलाशी नोटिस जारी हुआ मगर वह गुप्तचर विभाग एस. टी. एफ. एअरपोर्ट और सारे सरकारी तन्त्र की आखों में धूल झोंक कर अमेरिका चला गया। उसे नई दिल्ली के अमेरिकी दूतावास ने पनाह दी और अमेरिकी सरकार ने अपने देश के नागरिक कानून का हवाला देते हुये केन देवई के बारे में कोई भी जानकारी देने से साफ मना कर दिया। इसका क्या मतलब है? क्या इस घटना के बाद भी यह साबित करना बाक़ी रहजाता है कि भारत, अमेरिका और इसराइल के चंगुल में है और देश के भीतर आतंकी घटनाओं के पीछे विदेशी ताक़तों का हाथ है। मोहरा कोई भी बनता है और बन सकता है और मुसलमान बिना कसूर के पीसा जा रहा है तथा इसलाम की छवि धूमिल की जा रही है।

हाल ही में गुजरात से सम्बन्ध रखने वाले एक केन्द्रीय मंत्री शंकर सिंह वाघेला ने कहा है कि "सूरत शहर में जो बम बरामद हुये थे वह गुजरात पुलिस ने रखवाये थे। अफसोस कि सरकारी कर्मचारी जो शान्ति व्यवस्था के ज़िम्मेदार होते हैं इस प्राकर की हरकतें करने लगे हैं और आरोप मुसलमानों को दिया जाता है कोई बताये कि लखनऊ में इसराईल की कुख्यात गुप्तचर संस्था के दो या तीन केन्द्र क्या काम कर रहे हैं? ये एजेंन्सियां फिलिस्तीन, इराक़ और तुर्की में क्या कर रही हैं? और इराक़ में कितने वैज्ञानिकों को कत्ल करा चुकी हैं? अगर यह सच है तो डा. अजमल फ़ारूकी के शब्दों में "क्या वे लखनऊ में रजाई और कम्बल बाटने का काम कर रही हैं?

हसन साहब ने न जाने किस तरह आतंकवाद की जड़ें कुरआन और इसलाम में ढूढ निकालीं और ज्याउद्दीन सरदार , हसन बट और सेराज महर जैसे गैर विख्यात लेखकों और विद्वानों के नाम गिनवा डाले। कौन उन्हें जानता है कि वे इसलाम और इसलामी इतिहास के विशिष्ट ज्ञानी हैं। हसन साहब को हम सलाह देना चहेंगे कि वे कुरआन का अध्यन करें जिसको एक अंग्रेज मारमा डयूक पिखताल ने पढ़कर न केवल इसलाम धर्म स्वीकार किया

बल्कि कुरआन का अग्रेजी भाषा में अनुवाद भी कया।

हम तो यह समझते हैं कि आतंकवाद की आड़ में अरबों डालर कमाने वालों और हथियारों की खरीदारी में करोड़ों डालर खाने वालों को छोड़कर केवल मुसलमानों को निशाना बनाने का उद्देश्य इसके अलावा कुछ नहीं है कि जनता का ध्यान मंहगाई, भ्रष्टाचार, प्रशासनिक लूट खसूट से हटाने के लिये एक "कथित दुशमन" इसलामी आतंकवाद का हव्वा खड़ा कर दिया जाय। अगर मदरसों की शिक्षा से ही हिंसा पैदा होती है तो फरवरी 2008 के दूसरे सप्ताह में अमेरिका के चार स्कूलों में 19 छात्रों का कत्ल किस खाते में डाला जायगा? और अभी अगस्त 2008 में अमेरिकी प्रांत टेक्सास के एक जिले में अध्यापकों को बाकायदा शस्त्र लेकर कक्षा में आने की अनुमति दी गई है। इसको आप क्या कहेंगे? अमेरिकी सरकार ने ऐसा इसलिये किया कि इन शिक्षकों को छात्रों में बढ़ती हुई हिंसा की प्रवृति से अपनी जान का खतरा था।

यह उसी अमेरिका का हाल है जो सारी दुन्या में अमन व शान्ती का सबसे बड़ा ठेकेदार बना बैठा है। हम हसन साहब को सलाह देंगे कि वे नये सिरे से इस मसले पर विचार करें। हम यह मानते है कि वे एक मुस्लिम परिवार में पैदा हुये मगर अफ़सोस कि उन्हें इसलाम के अध्यन का अवसर नहीं मिला। अगर उन्होंनें अध्ययन किया होता वे जानते कि पैगम्बर हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के ज़माने में 23 वर्षों में जो छोटी बड़ी लड़ाइयां हुई उनमें कुछ ही लड़ाइयां ऐसी थीं जिन्हें बाकायदा युद्ध का नाम दिया जा सकता है और इन सारी लड़ाइयों में मुस्लिम गैर मुस्लिम कुल मिलाकर 1081 लोग हताहत हुये। अगर इस्लाम आतंकवाद का पोषक या प्रचारक होता तो यह संख्या लाखों नहीं करोड़ों में होती जैसा कि पश्चिमी देशें की ओर से दुनिया पर थोपे गये युद्धों में हम देखते हैं।

शायद ब्रिटेन के प्रख्यात इतिहासकार एवं साहितयकार जार्ज बर्नाड शा का यह कथन हसन साहब की नज़र से गुज़रा हो कि "आने वाली सदी में दुन्या के सभी धर्म अपना अस्तित्व खो देंगे अलावा इसलाम के क्योंकि यही एक ऐसा धर्म है जो समय के तकाजों को पूरा करता है" अमेरिका की एक स्वतन्त्र सर्वेक्षण सस्थां के अनुसार सन् 2025 तक धरती पर आबाद लोगों में एक तिहाई मुसलमान होंगे। कहा जा सकता है कि अमेरिका और बुश की सारी बेचैनी शायद इसीलिये है। 9/11 की दुखद घटना भी यही कह रही है। इस घटना के बाद अफ़गानिस्तान पर आक्रमण से पहले बुश ने क्या नहीं कहा था कि यह धर्म युद्ध है और फिर तुरन्त ही मुकर गये थे। यही वह चीज़ें है जो लोगों को परेशानी में डाले हुये है जिनसे बचने के लिये तरह तरह के हथकंडें अपनाये जा रहे हैं और इसलाम व मुसलमानों की छवि धूमिल की जा रही है। उम्मीद है हसन साहिब इन तथ्यों पर जरूर विचार करेंगें और दूध में ज्यादा मेंगनियां डालने की कोशिश नहीं करेंगे।

❑❑

इस्लामी अक़ाइद .....

इसी तरह हज्ज के एक एक रुक्न से खुदा से मजनूनाना इश्क व महब्बत का इज्हार होता है। उस की किब्रियायी व अज़मत का नक्श दिल पर उभरता है और बन्दे के हर अज़्व और हर अदा से उस की अजमत जाहिर होती है। एहराम बांधने के बअद ही से लब्बैक अल्लाहुम्मा लबैक की सदा हर तरफ सुनाई देने लगती है। गोया बन्दा उसकी तरफ दौड़ रहा है और पुकार का जवाब दे रहा है, मुलतजम, और मीज़ाबे रहमत के पासकी जो दुआएं नक्ल की गयी हैं और पढ़ी जाती हैं। वह सब तौहिदे खालिस का मजहर (सूचक) है।

गरज यह कि तौहीद का यह तसव्वुर जब तक इस तरह जेहन नशीन न हो जाए कि ज़िन्दगी के हर काम में तौहीद की कार फरमाई (अस्तित्व) दिखाई देने लगे, उस वक़्त तक एक मुअ्मिन मुअ्मिने कामिल (सम्पूर्ण) मुअ्मिन नहीं हो सकता।

❑❑

? आपके प्रश्नों के उत्तर ?

– इदारा

प्रश्न :– हम दो भाई शादी शुदा साहिबे औलाद अपने माँ बाप के साथ एक ही घर में एक साथ रहते हैं, हमारी औलाद में भी लड़के और लड़कियां बालिग़ हो चुकी हैं। एक ही घर में रहने के सबब चचाज़ाद भाई बहन पर्दा किस तरह करें घरेलू ज़रूरियात के लिये उनका आमनाा सामनाा बराबर रहता है और अकसर चचाज़ाद बहन अपने चचा ज़ाद भाई को खाना नाशता और दूसरी ज़रूरत की चीजें पेश करती हैं इस का क्या हुक्म है?

उत्तर :– चचा ज़ाद, फूफी जाद, ख़ाला ज़ाद, मामू ज़ाद, भाई बहनों में पर्दा है जभी तो इन में बाहम रिश्ते होते हैं। हमारे मुल्क में ग़ुरबत के सबब हर बालिग़ लड़के के लिये मकान या कमरा अलग नहीं हो पाता ऐसे में एक साथ रहना होता है, चचा ज़ाद बालिग़ भाई बहनों के अलग अलग कमरे नहीं हो पाते ऐसे चचाज़ाद बालिग़ भाई बहनों का सामना न हो इसमें दुश्वारी होती है। बेहतर तो यही है कि चचाज़ाद, फूफी ज़ाद बग़ैरह बालिग़ भाई बहनों के कमरे अलग अलग हों और वह एक दूसरे से मुकम्मल पर्दा करें अगर यह मुम्किन न हो तो चाहिये कि चचा ज़ाद बालिग भाई बहन वग़ैरह सातेर लिबास जो घुटने से नाफ़ तक है और औरत का सातिर लिबास वह है जो पूरे जिस्म को ढ़के सिवाए, चेहरे, गट्टों तक हाथ और टखनों के नीचे पैरों के। ऊपर का कुर्ता वग़ैरह आस्तीन दार हो सर के बाल स्कार्फ़ या दोपट्टे से पूरी तरह ढके हों। आज कल हमारे यहां जो दोपट्टा ओढ़ने का रिवाज है कि सर के आधे या चौथाई सर के बाल दिखते हैं इससे सत्र नहीं होता यह दोपट्टा सातिर नहीं है। ग़रज़ कि सातिर लिबास के साथ ज़रूरत पर एक दूसरे के सामने आएं मगर तन्हाई न हो। सब के सामने चचाज़ाद बहन सातिर लिबास के साथ चचाज़ाद भाई को खाना पानी पेश करे ज़रूरत, की बात करे तो इन्शाअल्ला गुनाह से बच जाएंगे। मगर याद रहे चचा जाद भाई बहन बग़ैरह जो बालिग़ हों वह एक साइकिल या मोटर साइकिल पर बैठ कर स्कूल, बाज़ार वग़ैरह न जाएं कि इसमें नामहरम से तन्हाई होगी और गुनाह होगा।

प्रश्नः– क्या हज़रत अ़ली रज़ियल्लाहु अ़न्हु अपने से पहले तीनों ख़ुलफ़ा की ख़िलाफ़त से राज़ी न थे? और इनके पीछे तक़य्या करके नमाज़ अदा करते रहे?

उत्तरः– अस्तग़फ़िरूल्लाहः मआ़ज़ल्लाह! हज़रत अ़ली रज़ियल्लाहु अ़न्हु के बारे में ऐसा तसव्वुर भी गुनाह है। वह अपने से पहले तीनों ख़ुलफ़ा को बरहक़ ख़लीफ़ा मानते थे। उनका भरपूर तआ़वुन किया, उनके पीछे पाबन्दी से नमाज़ें अदा करते रहे अ़ल्लामा हाफ़िज़ इब्नि अब्दुल बर्रे इस्तीआ़ब में हज़रत अ़ली रज़ियल्लाहु अ़न्हु से रिवायत करते हैः– क़ैस बिन इ़बाद से रिवायत है वह कहते है कि मुझसे अ़ली बिन अबी तालिब ने फ़रमाया कि रसूले ख़ुदा सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम कई दिन रात बीमार रहे इन दिनों में नमाज़ की अज़ान होती थी तो आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम फ़रमाते थे कि अबूबक्र को हुक्म पहुंचा दो कि वह लोगों को नमाज़ पढ़ाए, फिर जब रसूलुल्लाहु सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की वफ़ात हो गई तो मैंने ग़ौर किया कि नमाज़ इस्लाम का झन्डा और इस्लाम का रूक्न (स्तंभ) है। लिहाज़ा अपनी दुन्या की पेश्वाई के लिये उस शख़्स को पसन्द कर लिया जिसको रसूले ख़ुदा सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने हमारे दीन की पेश्वाई के लिये पसन्द फ़रमाया पस हमने अबू बक्र से बैअ़त कर ली।

नाफ़िउ़ल ऐसी का बयान हैः

एक मरतबा मैं सदके के ऊंटों के अहाते में उमर बिन अलख़त्ताब और अ़ली बिन अबी तालिब (रजि.) के साथ दाख़िल हुआ उ़स्मान साये में बैठ कर लिखने लगे। अ़ली (रज़ि.) उनके सामने खड़े जो कुछ उमर (रजि.) कहते उसका इम्ला करा रहे थे, उमर की कैफ़ीयत यह थी कि वह धूप में खड़े थे सख़्त गर्मी पड़

रही थी, उनके जिस्म पर दो चादरें थीं, एक से जिस्म लपेटे हुए थे और दूसरी चादर सर पर डाले हुए थे सदक़े में आए हुए ऊँट शुमार कर रहे थे, उन ऊँटों के रंग और उनके दांत नोट कर रहे थे, इस मौक़िअ पर अ़ली ने उ़स्मान से कहा कि कुर्आन में आया है या अबतिस् तअ्जिर्हु इन्न खैर मनिस् तअ्जर्तल् क़वियुल् अमीन (28:26) फिर उ़मर फ़ारूक़ की तरफ इशारा करके कहा हाज़ल्कवियुल् अमीन यह है जिनको क़वी और अमीन कहा जाए। (अलकामिल जि.3 पृष्ठ 55,56) यह रिवायत तीनों शुयूख के बाहम बेहतर तअ़ल्लुकात पर दलील हैं।

हज़रत उ़मर (रज़ि.) जब बैतुल मुक़द्दस गये तो अपनी जगह पर क़ाइम मुक़ाम (स्थानापन्न) हज़रत अ़ली (रजि.) ही को बनाया था। दोनों बुज़ुर्गों में बेहतर तअ़ल्लुक़ात की यह बहुत बड़ी दलील है।

सबसे अहम बात यह है कि हज़रत अ़ली (रजि.) ने अपनी बेटी उम्मे कुलसूम का निकाह हज़रत उमर (रजि.) से कर दिया था। (मजालिसुल्मुअ्मिनीन लेखक काजी नूरूल्लाह शोस्तरी), (अलमसालिक शरहुश्शरायअ लेखक अबुलकासिम अलकुम्मी) यह दोनों शीआ़ आ़लिम हैं। हम सुन्नियों के यहाँ तो हज़रत अ़ली (रज़ि.) का ख़ुलफ़ाए सलासा से बैअ़त करना उनके पीछे नमाज़ पढ़ना, उनसे महब्बत रखना, उनका तआवुन करना बिलइत्तिफाक़ मुसल्लम (माना हुआ) है।

हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अ़न्हु को फज्र की नमाज़ पढ़ते वक़्त 27 ज़िलहिज्जा स. 23 हिज्री को अब्लूलू मजूसी ने ज़ख़्मी कर दिया पहली मुहर्रम स. 24 हिज्री इतवार को आप ने शहादत पाई। आख़िर वक़्त 6 लोगों का नाम लिया और कहा कि इन्हीं में से किसी को ख़लीफ़ा चुन लेना वह छे नाम यह थेः उ़स्मान बिन अ़फ़्फ़ान, अ़ली बिन तालिब, तलहा बिन उ़बैदुल्लाह, ज़ुबैर बिन अ़वाम सअ़द बिन अबी वक़्क़ास और अब्दुर्रहमान बिन औफ़ रज़ियल्लाहु अ़न्हुम। बअ़द में छे में से तीन ने अपना हक़ बक़ीया तीन को दे दिया, हज़रत ज़ुबैर ने अपना हक़्के ख़िलाफ़त हज़रत अ़ली को, हज़रत सअ़द ने हज़रत अ़ब्दुर्रहमान को और हज़रत तलहा ने अपना हक़्के ख़िलाफ़त हज़रत उ़स्मान को दे दिया। अल्लाह इन सब से राज़ी हो। अब तीन हज़रात रह गये, हज़रत अ़ब्दुर्रहमान, हज़रत उस्मान और हज़रत अ़ली फिर हज़रत अ़ब्दुर्रहमान ने हज़रत उ़स्मान और हज़रत अ़ली से कहा कि आप, दोनों में से जो ख़लीफा न बनना चाहे वह बक़ीया दो में से जिसे अच्छा समझे ख़लीफ़ा चुन दे। दोनों बुज़ुर्ग ख़ामोश रहे तो हज़रत अ़बदुर्रमान ने फ़रमाया अच्छा मै अपना हक़्केख़िलाफ़त छोड़ता हूँ तुम दोनों मुझे इख़्तियार दो मैं तुम में से जिसे बेहतर समझूँ ख़लीफ़ा बना दूँ। दोनों बुज़ुर्ग राज़ी हो गये। फिर तीन दिन तक हज़रत अ़ब्दुर्रहमान अ़वाम व ख़वास से मशवरा करते रहे, चौथे दिन अहले शूरा की मजालिस में हज़रत उ़स्मान की ख़िलाफ़त का एअ़लान किया, सभी हज़रात ने बैअ़त की हज़रत अ़ली ने भी बैअ़त की। कितने अच्छे और मुख़लिस लोग थे उन सब से अल्लाह राज़ी हो। इसके बअ़द कौन कह सकता है कि हज़रत अ़ली (रज़ि.) के तअ़ल्लुक़ात हज़रत उ़स्मान से अच्छे न थे? जिस वक़्त बाग़ियों ने हज़रत उस्मान (रज़ि.) का घर घेरा तो हज़रत अ़ली (रज़ि.) ने हज़रत उ़स्मान (रज़ि.) से इजाज़त मांगी कि वह बाग़ियों से मुक़ाबला करें, हज़रत ने कहाः मैं ख़ुदा का वास्ता उस शख़्स को देता हूँ जो अल्लाह को मानता और उसको हक़ समझता और इस बात को तस्लीम करता हो कि मेरा उस पर कोई हक़ है, एक पुछने के लगाने भर भी मेरी ख़ातिर ख़ून न बहाए। हज़रत अ़ली ख़ामोश होगये लेकिन दोबारा इजाज़त तलब की फिर वही जवाब मिला। क्या दुन्या भर के लीडरों में माज़ी में या हाल में इस अ़ज़मत का कोई लीडर गुज़रा है या मौजूद है। और क्या इसके बअ़द भी कोई कह सकेगा कि हज़रत अ़ली के तअ़ल्लुक़ात हज़रत उ़स्मान से अच्छे न थे?

हज़रत उ़स्मान ने जब हज़रत अ़ली को बाग़ियों से मुक़ाबले की इजाज़त न दी तो हज़रत अ़ली मस्जिदे नबवी में तशरीफ़ लाए जहां बाग़ियों का ग़ल्बा था लोगों ने आप से इमामत का मुतालबा किया आप ने फ़रमाया "इमाम जब कि ख़ान–ए–क़ैद में है मैं नमाज़ नहीं पढ़ाऊंगा लेकिन मैं तन्हा अपनी नमाज़ पढ़ूंगा चुनांचे तन्हा नमाज़ पढ़ कर अपने घर वापस गये।

(उस्मान बिन अफ़्फान ज़ुन्नुरैन लेखक उस्ताद सादिक़ अरजून पृष्ठ 218,219)

जब हज़रत उ़स्मान (रज़ि.) के घर का घेरा सख़्त हुआ और बाग़ियों ने खाना पानी भी अन्दर जाने से रोक दिया तो हज़रत अ़ली (रजि.) ने तीन मशकीज़े पानी हज़रत उस्मान (रज़ि.) के घर भेजे जिसमें पानी पहुंचाने वाले ज़ख्मी भी हुए। फिर हज़रत अ़ली (रजि.) ने दूसरे सहाबी ज़ादों के साथ अपने दोनों लाडिलों हज़रत हसन और हज़रत हुसैन राज़ियल्लाहु अन्हुमा को हज़रत उस्मान (रजि.) के दरवाज़े पर पहरा दारी के लिये डयूटी लगा दी थी जिस में हज़रत हसन (रज़ि.) ज़ख्मी भी हुए थे।

यह हैं वह वाक़िआ़त जिन से साबित होता है कि हज़रत अ़ली के तअ़ल्लुक़ात अपने से पहले तीनों ख़ुलफ़ा से बहुत अच्छे थे और तीनों पेश रवों, को बर हक़ ख़लीफ़ा मानते थे। अल्लाह इन सब से राज़ी हो।

प्रश्नः– क्या खलीफ़–ए–राशिद सिर्फ अव्वल के चार खुलफ़ा को कहेंगे या किसी और मुस्लिम ख़लीफ़ा को ख़लीफ़–ए–राशिद कह सकते हैं?

उत्तरः– ख़िलाफ़ते राशिदा इस्तिलाही लफ़्ज़ है जिस का ज़िक्र ह़दीस में आया है कि ख़िलाफते राशिदा तीस साल रहेगी उसके बअ़द बादशाही आ जाएगी हज़रत मौलाना अ़ब्दुश्शकूर साहिब (रह.) नफ़्ह़–ए–अ़ंबरीया पृष्ट 23 पर लिखतें हैः

रसूले ख़ुदा सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के बअ़द ख़िलाफ़ते राशिदा तीस बरस रही, इस मुद्दत में जो ह़ज़रात ख़लीफ़ा हुए वह ख़ुलाफाए राशिदीन हैं, उनको हम तमाम सह़ाब–ए–किराम से अफ़ज़ल जानते हैं, और उनमें बाहम एक दूसरे पर ब तरतीबे खिलाफ़त फ़ज़ीलत है।

यह तीस साल हज़रत हसन की सुल्ह़ पर पूरे होते हैं जो उन्होंने हज़रत मुआ़विया (रज़ि.) से की जिस की इत्तिल्ला हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने पहले से दे रखी थी इस लिये हज़रत ह़सन को भी ख़लीफ़–ए–राशिद कहा जाएगा। जनाब मौलाना ग़ुलाम रसूल मह्र अपनी किताब खिलाफ़ते राशिदा में हज़रत ह़सन रज़ियल्लाहु अ़न्हु का ज़िक्र लाए हैं।

❑❑

"हम और हमारा शरीर"

– डॉ0 मुजफ्फर अली

- हमारा मस्तिष्क लगभग 10 अरब स्नायु कोशिकाओं से मिलकर बना है और हमारे मस्तिष्क का वज़न डेढ़ किलो है।
- हमें नींद आने में लगभग 6 मिनट लगते हैं, और हम हर रात सपने देखते हैं।
- हमारे शरीर में इतना लोहा मौजूद रहता है जिससे एक इंच की कील तैयार की जा सकती है।
- हमारा दिल एक मिनट में 72 बार धड़कता है तथा एक वर्ष में 15 लाख गैलन रक्त पंप करता है।
- हमारे शरीर में पानी की मात्रा 65 प्रतिशत है यानी हमारे शरीर में आधे से अधिक पानी मौजूद है।
- हाथ की पांचों उंगलियों में अंगूठा सबसे ज़्यादा महत्वपूर्ण है। हाथ का 45 प्रतिशत कार्य अंगूठा ही करता है।
- एक घन मिली मीटर रक्त में लगभग आठ हज़ार लाख रुधिर कोशिकाएं होती हैं। हमारी पचास लाख रुधिर कोशिकाएं तथा रक्त धमनियों में रक्त प्रवाह की गति 300–500 मि0मी0 प्रति सेकेण्ड होती है। हमारे रक्त के चार ग्रुप हैं तथा रक्त पानी से 6 गुना भारी होता है।
- हमारे शरीर पर बानरों से अधिक बाल होते हैं जो महीन और सूक्ष्म होने के कारण दिखाई नहीं देते। मनुष्य की मृत्यु के पश्चात भी उसके शरीर पर बाल बढ़ते रहते हैं।
- पचास किलो ग्राम वज़न के मनुष्य की त्वचा का भार 28 कि.ग्रा. होता है। यदि किसी मनुष्य की त्वचा छील पर ज़मीन पर बिछा दी जाये तो वह 18 वर्ग फुट स्थान लेगी, जो कि एक डबल बेड के बराबर है।

❑❑

अंतरराष्ट्रीय समाचार

– डॉ0 मुइद अशरफ

गाँव और शहर में असमानताः–

1991 की जनगणना के अनुसार देश में गांवों की संख्या 5 लाख 58 हजार 88 थी और उसमें देश की कुल आबादी का 74.3 फीसद हिस्सा इन गांवों में रहता था। गांवों में आबादी का फीसद घट रहा है। 1901 में ग्रामीण आबादी 89.2 फीसद थी। 1961 की जनगणना के अनुसार देश की आबादी 44 करोड़ में लगभग दस फीसद खेतिहर मजदूर थे। जब 1971 में जनगणना की गई तो कुल आबादी 54.7 करोड़ में खेतिहर मजदूरों की तादाद 30 प्रतिशत हो गई। 1946 में खेत मजदूरों की मजदूरी पूर्वी उत्तर प्रदेश मे 25 पैसे थी तो दिल्ली में पचास पैसे थी। यह मजदूरी 1974 में बढ़कर ढाई रुपये हुई तो दिल्ली में छे रुपये हुई। पंजाब में इन वर्षों में तीस पैसे से बढ़कर पांच रूपये हुई। 1967 में एक क्विंटल गेहूं में 121 लीटर डीजल मिल जाता था और 2006 में 1 क्विंटल में मात्र 21 लीटर डीजल मिल सका, 35 हार्स पावर का मैसी ट्रैक्टर 195 क्विंटल की कुल कीमत 146000 में मिल जाता था। लेकिन 2006 में इसकी कीमत 457 क्विंटल गेहूं की कीमत के बराबर 3 लाख 20 हजार रूपये है।

अमेरिका में बढ़ रही है गरीबीः–

वाशिंगटन, अमेरिकी जनगण्ना बयूरो की वार्षिक रिपोर्ट के मुताबिक तीन करोड़ 70 लाख से अधिक अमेरिकी गरीबीं में जीवन बिता रहे है और लगभग चार करोड़ 60 लाख लोगों का स्वास्थ्य बीमा नहीं है। अमेरिका जनसंख्या ब्यूरो की आय गरीबी और स्वास्थ्य बीमा पर वार्षिक रिपोर्ट के मुताबिक वर्ष 2007 में अमेरिका में गरीबी में जीवन बिता रहे लोगों की संख्या 2006 के तीन करोड़ 65 लाख से बढ़कर लगभग 3 करोड़ 73 लाख हो गई है। वर्ष 2007 में एक चार सदस्यों वाले परिवार के लिए ग़रीबी की सीमा 21000 डालर रखी गई थी। हालंकि वह मिलवाकी जैसे छोटे अमेरिकी शहर में रहते हों या फिर लास एंजिल्स जैसे बड़े शहर में रहते हों जहां निवास का खर्च कहीं अधिक है। सांख्यिकीय ब्यूरो के आवास एवं घरेलू आर्थिक विभाग के प्रमुख डेविड जानसन ने बताया कि बिना स्वास्थ्य बीमा वाले लोगों की संख्या वर्ष 2006 के चार करोड़ 70 लाख से घटकर 2007 में चार करोड़ 57 लाख हो गई।

अब रोपिए मशीन से मिर्च बैगन, गोभी की पौधः–

लुधयाना (एजेंसी) किसानों के लिए खुशखबरी! अब वह सब्जियों की पौध को पौधशाला से निकालने के बाद यंत्र के माध्यम से अपने खेतों में लगा सकेगें। पंजाब कृषि विश्वविद्यालय के फार्म पावर और मशीनरीविभाग की ओर से ट्रैक्टर चालित एक यंत्र का विकास किया गया है जो किसानों की मुश्किलों को आसान कर देगा। फार्म पावर और मशीनरी विभाग के पूर्व प्रमुख डा. आई के गर्ग, अनुसंधान इंजीनियर जी एस मनेश और डा. अनूप दीक्षित के संयुक्त प्रयास से विकासित इस यंत्र के माध्यम से किसान पूर्व की तुलना में 50 प्रतिशत श्रमिकों की बचत कर सकेंगे। इस यंत्र के माध्यम से प्रतिदिन लगभग दो एकड़ में सब्जियों की पौध लगाई जा सकेगी। ट्रैक्टर चलित इस यंत्र के माध्यम से बैगन, फूलगोभी, बंदगोभी, टमाटर, मिर्च आदि की पौध को सुगमता से लगाया जाएगा। कृषि अभियंत्रण कालेज के डीन डा. पी के गुप्ता ने बताया कि लोहे के ढांचे पर विकसित इस यंत्र में दो पहिए लगे हैं। इसमें पौध रखने के लिए एक ट्रे लगा है और आपरेटर के बैठने की जगह भी है। इसके अलावा इसमें नाली बनाने के उपकरण और फिर उसे अच्छी तरह ढकने के लिये उपकरण भी लगे है। इस यंत्र में एक सौ लीटर, क्षमता की एक पानी की टंकी भी लगी है ताकि पौध लगाने के बाद फुहारे से उसकी सिंचाई की जा सके।

घट रहीं शाखाएं, बढ़ रही राजनीतिः–

राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ की घटती शखाओं तथा सांगठनिक गतिविधियों में बढ़ती राजनीति ने वरिष्ठों की चिन्ताएं बढ़ दी है। माना जा राह है कि शाखाएं न लगने से आनुषांगिक संगठनों में अनुशासनहीनता बढ़ रही है। इसी

का परिणाम है कि संघ से जुड़े युवकों का रुझान सामाजिक तथा अन्य कार्यों से राजनीति व महत्वपूर्ण पदों को हासिल करने की तरफ बढ़ रहा है संघ के महत्वपूर्ण पदों पर बैठे लोगों के हस्तक्षेप से उसके आनुषांगिक संगठन भी परेशान हैं और ऐसे लोगों के खिलाफ़ आवाज उठाने लगी है। संघ की पिछले दिनों हुई बैठकों में शाखाओं की घटती संख्या पर गहरी चिन्ता व्यक्त की गयी। संघ के संस्थपक डा़ केशव बलिराम हेडगेवार ने शाखओं को संघ केवल शाखा लगाये तो भी सामाजिक बदलाव की सरिता बह निकलेगी। संघ की सायंकालीन शाखाओं से ही राजेन्द्र सिंह उर्फ रज्जू भैया, अशोक सिंघल, अटल बिहारी वाजपेयी, लालकृष्ण आडवाणी तथा राजनाथ सिंह निकल कर इस मुकाम तक पहुंचे।

संघ के प्रचाराकों के संदर्भ में कुछ नकारात्मक प्रचारों ने भी युवाओं को सायंकालीन शाखाओं में जाने से रोका है। वर्ष 1990-91 के रामजन्मभूमि आंदोलन के बाद भाजपा के सत्ता में आने के बाद से संघ के नेताओं की सिथति 'किंग मेकर' की हो गयी और इस तरह से तमाम नेताओं ने राजनीतिक एवं प्रशासनिक मामलों में दखल देना शुरू कर दिया। स्थिति यह हुई कि भाजपा अध्यक्षों के चुनाव से लेकर मुख्यमंत्री तक की सूची संघ कार्यालय से अनुमोदित होने लगी। यही नही सांसदों व विधायकों के टिकट भी संघ नेताओं की संसतुति पर दिये जाने लगे। पिछले चुनावों में संघ की सूची का खमियाजा भाजपा को प्रदेश में भुगतना पड़ा। संघ ने 54 लोगों को विधानसभा का टिकट देने की संस्तुति की थी जिसमें से केवल एक जीता। संघ के साथ ही विश्व हिन्दू परिषद ने भी रामजन्मभूमि आंदोलन के बाद भाजपा पर अपना दबाव बनाना शुरू कर दिया था और उसी की संसुतति पर कई संत सांसद तथा विधानसभओं में पहुंचे। संघ की शाखाओं का आलम यह है कि राजधानी लखनऊ में 1200 शाखाएं लगने के दावे किये जाते है। इसमें भी 4–5 ही दिखायी देती हैं।

❑❑

समाज सुधार.....

समाज सुधार के बिन्दु क्या हों? यह एक विचारणीय बिन्दु है। मर्यादित आचरण को प्रत्येक समाज ने मान्यता दी है। मर्यादित आचरण क्या है? सीधे रास्ते पर चलना, भटके हुओं के रासते से बचना। समाज में आदिकाल से चली आ रही मान्यताओं का पालन करना यथा झुठ, चोरी अत्याचार आनाचार, पाखँड़ और घमण्ड़ से बचना, बड़ों का आदर छोटों के प्रति स्नेह, इन्सान को इन्सान समझना, इन्सानियत के दायरे में रहना प्रेंम और भाईचारे के साथ रहना, एक दूसरे के सुख दुख में शामिल होना, मान सम्मान का ध्यान रखना, तोड़ फोड़ से बचना, सर्जनात्मक सोच वाला बनना, अपव्ययता (फिजूलखर्ची) से बचना, उदार आचरण करना, विनय–सहिष्णुत धारण करना, एक दूसरे के काम आना, दिलों को जोड़ने का काम करना, पराई पीर का एहसास करना आदि।

आत्म चिन्तन करें, अपना जायजा स्वयं लें। अन्तः करण जहाँ रोके या ठिठके वहाँ रुक जायें, मनमानी न करें। मर्चादित सीमाओं के अन्दर रहते हुए वह काम करें जिस से आन्तरिक सुख और शन्ति मिले, ईर्ष्या–द्वेष से बचें, अन्ध विश्वास और कुरीतियों से दूर रहें। धर्म धारण करें। किसी नेक काम का इरादा करना काफी नहीं है, उसे करने से ही फल की प्राप्ति होगी। निः स्वार्थ भाव से तन से मन से कुछ करिये। अपने लिये औरो के लिये। और तब हम सुधरेंगे, जग सुधरेगा।'

'वसुधैव कुटुम्बकम्' (अल खल्कु अयालुल्लाह) यह धरती एक विशाल मकान है और इस पर बसने वाले लोग एक विशाल परिवार के सदस्य, हम सब का खलिक एक, मालिक एक, पालनहार एक। फिर टकराव क्यों? नफरत क्यों? दूरियाँ और दीवारें क्यों? फसाद क्यों? बिगाड़ क्यों? मार काट क्यों? तोड़ फोड़ और बर्बादी वह भी अपने हाथें क्यों? दुनिया में इन्सान बहुत है, पर दाना कम नादान बहुत है। नादान को दाना व समझदार बनाना मुशकिल जरूर है किन्तु नामुमकिन नहीं। पक्का इरादा निष्ठापूर्वक प्रयास ,सतत्, परिश्रम से, बड़ी सद विचार से बड़ी कठिनाई दूर हो जाती है। सोचें, विचार करें, अकेले दुकेले बाँटे वाणी से, कर्म से, एक को, दो को, सब को।

❑❑